04 - ज़िंदगी का उजास- सामाजिक यथार्थ और भावनात्मक अनुभवों...
05 - उमाशंकर की कृतियों में प्राणियों का जीवन संघर्ष
06 - 'एक शाम हनुमान जी के नाम' देश के तीन प्रमुख मंडल एक मंच पर
07 - वो दशक जो हिंदी सिनेमा का बेहतरीन दौर रहा

A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 8 जून, 2025
भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 22, अंक 268, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailĐcom
facebookĐcom/subahsaverenews
wwwĐsubahsavereĐnews
twitterĐcom/subahsaverenews

प्रकृति के रंग

द्वारकाधीश मंदिर कांकरोली

फोटो : पंकज शर्मा

सुप्रभात

दिन के बोध से
रात की स्मृति हो आती है
सुख के बोध से दुःख की

जीवन के बोध के साथ आता है
स्मरण मृत्यु का
और मृत्यु के बोध से आती है उदासी

तुम्हारे बोध से उत्पन्न होता? है जीवन-राग
जो देता? है मेरे जीवन को आग।

– विजय राही

अब आपके सभी डिजिटल डेटा तक होगी सरकार की पहुंच!

सूचित करना नहीं होगा जरूरी, 1 अप्रैल 2026 से लागू होगा कानून

आईटी विभाग को मिलेगी एक्स्ट्रा पॉवर, ईमेल्स-बैंक खाते जांच सकेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। अब आपके सारे डिजिटल डेटा पर सरकार की नजर रहेगी। आपको बिना बताए ईमेल से लेकर सोशल मीडिया पर सरकार पहुंच सकेगी। इसे लेकर एक नया कानूनी नियम आने वाला है। यह 1 अप्रैल 2026 से लागू होगा। इस नए कानून के अनुसार इनकम टैक्स डिपार्टमेंट आपका सोशल मीडिया अकाउंट्स, ईमेल्स, बैंक अकाउंट्स और ट्रेडिंग अकाउंट्स को एक्सेस कर पाएगा। आयकर विभाग को अगर आप पर किसी भी तरह से शक होता है कि आपने टैक्स की चोरी की है या आपके पास अघोषित आय है या आप किसी गैरकानूनी सम्पत्ति और ज्वैलरी के मालिक हैं, तो वह आपकी पूरी ऑनलाइन हिस्ट्री कानूनी रूप से खंगाल पाएंगे। चलिए इस नए कानूनी नियम के बारे में डिटेल में समझते हैं। भारत का इनकम टैक्स एक्ट, 1961 की धारा 132 पहले ही

अधिकारियों को तलाशी लेने और संपत्ति व अकाउंट बुक्स जब्त करने का कानूनी अधिकार देती है। ऐसा तब होता है जब इनकम टैक्स विभाग को टैक्स की चोरी का शक हो। अब यह अधिकार सिर्फ फिजिकल जगहों तक सीमित नहीं रहेगा। नए इनकम टैक्स बिल के तहत अधिकारियों को डिजिटल दुनिया की जांच का अधिकार भी मिलेगा। इसका मतलब है कि अगर किसी शख्स पर टैक्स चोरी का शक हो, तो अधिकारी उसके कंप्यूटर सिस्टम, ईमेल्स, क्लाउड स्टोरेज या सोशल मीडिया अकाउंट्स को कानूनी रूप से खंगाल पाएंगे। इसके लिए उन्हें आपसे किसी तरह की इजाजत लेने की जरूरत नहीं होगी। यह बदलाव टैक्स चोरी के डिजिटल तरीकों पर लगाम लगाने के लिए लाया जा रहा है। ऐसा माना जा रहा है कि इस कानून की वजह से इनकम टैक्स अधिकारी डिजिटल डेटा में झांक कर चोरी करने वालों को आसानी से पकड़ पाएंगे। नए इनकम टैक्स बिल के मुताबिक वर्चुअल डिजिटल स्पेस की परिभाषा अब पहले से कहीं ज्यादा डिटेल में लिखी गई है। इसमें टैक्सपेयर्स के सोशल मीडिया अकाउंट्स, बैंक खाते, ट्रेडिंग और इन्वेस्टमेंट अकाउंट्स और ईमेल्स जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म्स को शामिल किया गया है। ये सभी अब सीधे डिजिटल डेटा की सीमा में आएंगे। रिपोर्ट्स के अनुसार बिल में बताया है कि डिजिटल दुनिया पर नजर रहेगी।

सीहोर में सीएम डॉ. यादव के साथ केंद्रीय मंत्री शिवराज ने 113 करोड़ की परियोजनाओं का किया लोकार्पण

पीएम आवास के सभी आवेदन तत्काल स्वीकृत होंगे : शिवराज

भोपाल/सीहोर (नप्र)। शनिवार को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान सीहोर पहुंचे। इस दौरान सीहोर के शासकीय पीजी कॉलेज मैदान में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने 113 करोड़ 45 लाख रुपए की विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और भूमिपूजन किया।

जितने भी आवेदन आएंगे सभी को तत्काल स्वीकृत किया जाएगा-शिवराज – इस दौरान केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा- प्रधानमंत्री आवास योजना के लिए जितने भी आवेदन आएंगे सभी को तत्काल स्वीकृत किया जाएगा। उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिक गांव में जाएंगे और किसानों से संपर्क कर उन्हें महत्वपूर्ण सलाह देंगे।

सिंचाई के लिए नर्मदा नदी का पर्याप्त पानी उपलब्ध कराया जाएगा- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि क्षेत्र के किसानों को सिंचाई के लिए नर्मदा नदी का पर्याप्त पानी उपलब्ध कराया जाएगा। उन्होंने सीहोर के विकास के लिए 50 करोड़ रुपए की राशि और इंदौर नाके से चार किलोमीटर रोड की स्वीकृति दी। साथ ही श्यामपुर में नया कॉलेज खोलने और सीहोर में एक्सीलेंस कॉलेज के लिए नए भवन के निर्माण की घोषणा की।

कार्यक्रम में प्रभारी मंत्री कृष्णा गौर, राजस्व मंत्री करण सिंह वर्मा, भाजपा जिला अध्यक्ष नरेश मेवाडा, विधायक रमाकांत भार्गव, सुदेश राय, गोपाल इंजीनियर, नगर पालिका अध्यक्ष प्रिंस राठौर उपस्थित रहे।

दोनों नेताओं ने इन योजनाओं का लोकार्पण किया

इस दौरान 113 करोड़ की विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और भूमिपूजन किया गया।

शहरी विकास परियोजनाएं

अमृत 2.0 के तहत 21 करोड़ का सीवरेज प्रोजेक्ट और 3.50 करोड़ के मल्टीपरपज स्विमिंग पूल और जिम का निर्माण होगा। भोपाल नाके से कोतवाली चौराहे तक सीसी रोड बनेगी। उत्कृष्ट स्कूल से लुनिया चौराहे तक स्ट्रीट लाइट और डिवाइडर लगेंगे।

खेल और बुनियादी सुविधाएं

रेशम केंद्र के पास 4.41 करोड़ की लागत से स्टेडियम का निर्माण होगा। इंग्लिश पुरा में 7.83 करोड़ रुपए से नाला निर्माण कार्य किया जाएगा। कोतवाली चौराहे से तहसील चौराहे तक और मछली पूल से शुगर फैक्ट्री चौराहे तक बीटी सड़क बनेगी। जिले के 83 नए पंचायत भवनों के लिए 31.12 करोड़ रुपए, 25 पंचायतों में सामुदायिक भवन के लिए 6.23 करोड़ रुपए और विभिन्न गांवों में स्कूल भवनों के निर्माण के लिए राशि आवंटित की गई है। इछावर में स्वच्छ भारत मिशन के तहत जल प्रबंधन कार्य भी शामिल हैं।

आतंकवाद कतई बर्दाश्त नहीं एस जयशंकर की दो-टूक

विदेश मंत्री ने साथ देने के लिए ब्रिटेन को कहा धन्यवाद

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत आतंकवाद को कतई बर्दाश्त नहीं करने की नीति अपना रहा है, उम्मीद है कि हमारे साझेदार इसे समझेंगे। यह बात भारतीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने ब्रिटेन के विदेश मंत्री के साथ बातचीत के दौरान कही। जयशंकर ने पहलगाम हमले की निंदा करने और आतंकवाद के खिलाफ भारत की लड़ाई का समर्थन करने के लिए ब्रिटेन को धन्यवाद दिया। विदेश मंत्री ने कहाकि भारत कभी भी इस बात का समर्थन नहीं करेगा कि अपराध करने वालों को पीड़ितों के समान रखा जाए। इसके साथ ही जयशंकर ने हाल में हुए भारत-ब्रिटेन मुक्त व्यापार समझौता, दोहरा अंशदान समझौता को मील का पत्थर बताया।

खालिस्तानी आतंकी पन्नू का दावा कनाडा में पीएम मोदी को घेरेंगे

- **निज्जर की हत्या पर जवाब मांगेंगे, कार्नी ने भेजा है जी-7 समिट का न्योता**

अमृतसर (एजेंसी)। खालिस्तानी आतंकी और सिख फॉर जस्टिस के चीफ गुरपतवंत सिंह पन्नू ने वीडियो जारी कर दावा किया कि जी 7 समित के दौरान कनाडा में पीएम नरेंद्र मोदी को घेरेंगे। 8 जून 2023 को हुई हरदीप सिंह निज्जर की हत्या को लेकर उनसे जवाब मांगा जाएगा। बता दें कि कनाडा ने अल्बर्टा प्रांत के कनानास्किस में 15 से 17 जून तक होने वाले जी 7 समिट में शामिल होने के लिए पीएम मोदी को न्योता भेजा है। इसके

लिए कनाडा के पीएम मार्क कार्नी ने पीएम मोदी को फोन किया। मोदी ने एक्स पर पोस्ट कर खुद इसकी जानकारी दी थी। वीडियो में पन्नू ने कहा कि कनाडा के पूर्व केंद्रीय बैंक प्रमुख और संभावित प्रधानमंत्री मार्क कार्नी का धन्यवाद करता हूं, जिन्होंने खालिस्तान समर्थक सिखों को एक ऐतिहासिक अवसर प्रदान किया है। एक दुर्लभ मौका है, जिसमें वे जी 7 देशों और वैश्विक मीडिया के सामने सीधे नरेंद्र मोदी की राजनीति पर हमला कर सकते हैं।

सात राज्यों में फिर पड़ेगी तेज गर्मी, 5 डिग्री तक बढ़ेगा तापमान

असम-अरुणाचल को बाढ़ से थोड़ी राहत, एमपी में 15 जून तक आएगा मानसून

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के उत्तरी इलाकों में एक बार फिर गर्मी बढ़ सकती है। मौसम विभाग के मुताबिक राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, चंडीगढ़, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और बिहार में अगले दो दिन तापमान 5 डिग्री तक बढ़ेगा। साथ ही लू भी चल सकती है। राजस्थान के बीकानेर संभाग में 8 से 10 जून तक तापमान 45-46 डिग्री होने की संभावना है, कुछ स्थानों पर लू चल सकती है। साथ ही 30-40 किमी प्रतिघंटा की रफ्तार से धूल भरी हवाएं भी चल सकती हैं। 24 मई को केरल में एंट्री करने वाला मानसून 6 जून तक महाराष्ट्र के विदर्भ, दक्षिणी छत्तीसगढ़, ओडिशा और सिक्किम में रुका है। बिहार में प्री-मानसून एक्टिविटीज जारी हैं। हालांकि भारतीय मौसम विभाग के मुताबिक बंगाल, बिहार में 10 जून

तक मानसून पहुंच सकता है। मध्य प्रदेश को 15 जून तक मानसून का इंतजार करना पड़ सकता है। अरुणाचल प्रदेश में बाढ़ के हालात में मामूली सुधार हुआ है। कई नदियां खतरे के निशान से नीचे बह रही हैं। चांगलांग सबसे ज्यादा प्रभावित है, जहां 6 गांव डूब गए और 2,231 लोग बेघर हो गए हैं। इधर, आंध्र प्रदेश के कुछ हिस्सों में अगले 7 दिन तक बारिश का पूर्वानुमान है। इस दौरान आंधी, तूफान के साथ बिजली गिरने और 50 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चलने की संभावना है। 8 जून को राजस्थान में हीटवेव का अलर्ट है। धूल भरी आंधी चल सकती हैं। महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, पुडुचेरी में बारिश और आंधी का अलर्ट है। बाकी राज्यों में कोई चेतावनी जारी नहीं की गई है। 9 जून को राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, चंडीगढ़, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और बिहार में हीटवेव का अलर्ट है। लू चल सकती है। असम, मेघालय और अरुणाचल प्रदेश में भारी बारिश हो सकती है। मध्यप्रदेश में जून महीने में तेज आंधी और बारिश के साथ हीट वेव यानी, लू का भी असर देखने को मिल सकता है। मौसम विभाग ने 9 और 10 जून को ग्वालियर-चंबल के जिलों में लू का अलर्ट जारी किया है। इससे पहले 2 दिन यानी, 7 और 8 जून को कई जिलों में बारिश का दौर जारी रहेगा। शनिवार को 20 जिलों में बारिश होने का अनुमान है। मौसम विभाग ने यूपी के सभी जिलों में मौसम शुष्क रहने का अलर्ट जारी किया है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 32°c न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 8 मई 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

महाराष्ट्र के बाद अब बीजेपी बिहार चुनाव में भी करेगी मैच फिक्सिंग

राहुल गांधी ने लगाया गंभीर आरोप,कहा- महाराष्ट्र चुनाव चोरी से जीता

भाजपा का हमला,बोली-राहुल की बातें शर्मनाक,ईसी ने भी गलत बताया

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने नवंबर 2024 में हुए महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों को लेकर भाजपा पर सीधा आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि इस चुनाव में 'मैच फिक्सिंग' की गई थी, जिसमें पहले से भाजपा की जीत तय करने की पूरी कोशिश की गई। राहुल गांधी ने शनिवार को लिखे एक लेख में कहा, भाजपा और उसके सहयोगियों ने चुनाव जीतने के लिए 5 स्टेप की प्लानिंग की थी। उन्होंने ये भी कहा कि महाराष्ट्र की तरह की मैच फिक्सिंग अगली बार बिहार में होगी, फिर किसी भी राज्य में जहां भाजपा हारती दिख रही हो। भाजपा ने राहुल गांधी के आरोपों को शर्मनाक बताया है। भाजपा प्रवक्ता तुहिन सिन्हा ने कहा, राहुल फिर से देश की संस्थाओं

को बदनाम करने की कोशिश कर रहे हैं। चुनाव आयोग ने इन मुद्दों पर पहले भी साफ-साफ जवाब दिया है। राहुल ने कहा, यह समझना मुश्किल नहीं है कि महाराष्ट्र में भाजपा इतनी बौखलाहट में क्यों थी। लेकिन हेराफेरी करना मैच फिक्सिंग जैसा है। जो टीम धोखा देती है वो भले ही जीत जाए, लेकिन इससे संस्थाएं कमजोर होती हैं और जनता का चुनावी नतीजों पर भरोसा खत्म हो जाता है। हर जिम्मेदार भारतीय को इन सबूतों को देखना चाहिए, खुद निर्णय करना चाहिए और सवाल पूछने चाहिए। मैच फिक्स करके हुए चुनाव किसी भी लोकतंत्र के लिए जहर है। मैं किसी छोटे-मोटे चुनावी गड़बड़ी की बात नहीं कर रहा, बल्कि बड़ी धांधलेबाजी की बात कर रहा।

उत्तराखंड में हेलीकॉप्टर की सड़क पर इमरजेंसी लैंडिंग

- पीछे का हिस्सा कार पर गिरा, पायलट समेत 6 यात्री थे सवार

रुद्रप्रयाग (एजेंसी)। उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग में तकनीकी खराबी के कारण सड़क पर हेलिकॉप्टर की इमरजेंसी लैंडिंग हुई। इस दौरान हेलिकॉप्टर के पीछे का हिस्सा कार पर गिरकर टूट गया। इसमें कार भी पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई। हेलिकॉप्टर ने

बडासू हेलिपैड से केदारनाथ के लिए उड़ान भरी थी, जिसमें पायलट समेत 6 यात्री सवार थे। हादसे में पायलट को हल्की चोटें आई हैं। इसके अलावा अन्य यात्री सुरक्षित बताए जा रहे हैं। इसके बाद पायलट को नजदीकी अस्पताल में उपचार के लिए भर्ती कराया गया है। सीईओ सोनिका ने बताया- क्रिस्टल एविएशन प्राइवेट लिमिटेड का हेलिकॉप्टर सिरसी से उड़ान भरते समय सड़क पर एहतियातन लैंडिंग की।

सामना में छपी राज-उद्धव की फोटो, सुप्रिया ने दी बधाई

महाराष्ट्र में 'ठाकरे ब्रदर्स' के मिलन का बस ऐलान बाकी

पुणे (एजेंसी)। महाराष्ट्र मे मनसे-शिवसेना यूबीटी के बीच गठबंधन की अटकलों के बीच राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) की नेता सुप्रिया सुले ने बड़ा बयान दिया है। सुले ने शनिवार को कहा कि मैं इस फैसले का स्वागत करती हूं। वे एक परिवार हैं और बालासाहेब की विशाल विरासत का हिस्सा हैं।अगर वे एक साथ मिलकर इस विरासत को आगे बढ़ाते हैं, तो यह हमारे लिए खुशी का पल होगा। महाराष्ट्र में स्थानीय निकाय चुनावों से पहले ठाकरे ब्रदर्स (उद्धव ठाकरे-राज ठाकरे) के साथ आने की अटकलें लग रही है। शुक्रवार को उद्धव ठाकरे के बयान से महाराष्ट्र का

सियासी पारा चढ़ गया है। उद्धव ठाकरे ने कहा था कि हम कोई मैसेज नहीं देंगे बल्कि सीधे खबर देंगे। उद्धव ठाकरे के बयान के बाद राजनीतिक हलकों में चर्चा है कि दोनों भाई दो दशक बाद एक साथ आने का मन बना चुके हैं। मातोश्री में उद्धव ठाकरे से पूछा गया था कि दोनों भाई कब एक होंगे तो उद्धव ठाकरे ने कहा था जल्द होगा।

यूपी डीजीपी का पद संभालते ही ऐक्शन मोड में राजीव कृष्ण

- पुलिस अधिकारियों को दिए 10 बड़े निर्देश,अब बदलेगी सूरत

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के नवनियुक्त पुलिस महानिदेशक राजीव कृष्ण ने पदभार ग्रहण करते ही अपने इरादे साफ कर दिए हैं। कानून-व्यवस्था और अपराध नियंत्रण को लेकर राजीव कृष्ण ने जरूरी दिशा निर्देश दे दिए हैं। डीजीपी राजीव कृष्ण ने शुक्रवार को प्रदेश भर के पुलिस अधिकारियों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग कर 10 प्रमुख प्राथमिकताओं के

तहत दिशा-निर्देश दिए हैं। बैठक के दौरान राजीव कृष्ण ने स्पष्ट कर दिया कि उनकी प्राथमिकता प्रोफेशनल पुलिसिंग, जनता में विश्वास और अपराध पर जीरो टॉलरेंस होगी। डीजीपी राजीव कृष्ण ने बैठक के दौरान बताया कि पिछले 8 सालों में सीएम योगी की मजबूत इच्छाशक्ति से यूपी ने देश और दुनिया में कानून-व्यवस्था का एक नया मानक स्थापित किया है। अब इसे और आगे ले जाने की जरूरत है। साथ ही कहा कि थाना प्रभारियों की पोस्टिंग सिर्फ मेरिट के आधार पर होनी चाहिए।

- मुर्शिदाबाद हिंसा मामले में पुलिस ने दाखिल की चार्जशीट

इसमें 13 नाम, वक्फ बिल के खिलाफ बंगाल में हुए थे प्रदर्शन

- 113 घर तोड़े गए, दुकानें जलाई गईं, तीन लोगों की गई थी जान

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल पुलिस ने मुर्शिदाबाद के जाफराबाद में अप्रैल में हुई हिंसा में पिता-बेटे के डबल मर्डर मामले में शुक्रवार को 13 लोगों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की। राज्य में 11-12 अप्रैल को नए वक्फ बोर्ड कानून के खिलाफ विरोध प्रदर्शन के दौरान भीड़ उग्र हो गई थी। इसके बाद हिंसा भड़क गई थी। इसमें कम से कम तीन लोगों की मौत हुई थी और कई लोग घायल हुए थे। इस हिंसा को लेकर कलकत्ता हाईकोर्ट की तरफ से जांच समिति गठित की गई थी। पिछले महीने समिति ने गंभीर खुलासे किए थे। इसमें कहा गया है कि हिंसा में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस के स्थानीय नेता की भूमिका थी। हमलों का नेतृत्व स्थानीय पार्षद महबूब आलम ने किया। रिपोर्ट के अनुसार हिंसा में खासतौर पर हिंदू समुदाय को निशाना बनाया गया। इस दौरान स्थानीय पुलिस पूरी तरह से निष्क्रिय

रही। पीड़ितों ने कई बार पुलिस को कॉल किया, लेकिन कोई मदद नहीं पहुंची। दरअसल, 17 अप्रैल को हाईकोर्ट ने तीन सदस्यीय समिति का गठन किया था। इसमें राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, पश्चिम बंगाल मानवाधिकार आयोग और राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के एक-एक सदस्य शामिल थे। पश्चिम बंगाल के गवर्नर सी. वी. आनंद बोस ने 4 मई को मुर्शिदाबाद दंगे पर गृह मंत्रालय को रिपोर्ट सौंपी थी। इसमें कट्टरपंथ और उग्रवाद को पश्चिम बंगाल के लिए बड़ा खतरा बताया था। गवर्नर ने कहा था कि बंगाल को दोहरा खतरा है, खासतौर पर बांग्लादेश से सटे मुर्शिदाबाद और मालदा जिलों में ज्यादा है, क्योंकि यहां हिंदू आबादी अल्पसंख्यक हैं। उन्होंने नॉर्थ दिनाजपुर को भी संवेदनशील जिला बताया था। गवर्नर ने दावा किया था कि मुर्शिदाबाद हिंसा पहले से ही प्लान की गई थी।

बीजापुर में 2 नक्सली ढेर ऑटोमैटिक हथियार बरामद

- नेशनल पार्क में 3 दिनों से सुरक्षा बलों का ऑपरेशन जारी
- अब-तक टॉप कमांडर सुधाकर-भास्कर समेत 4 मारे गए

बीजापुर (एजेंसी)। बीजापुर के नेशनल पार्क में चल रहे ऑपरेशन के तीसरे दिन शनिवार यानी आज 2 और

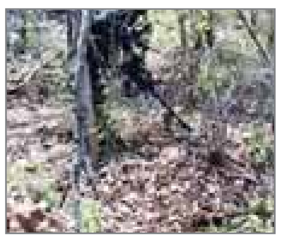

नक्सली ढेर किए गए हैं। ऑटोमैटिक हथियार भी बरामद किए हैं। पिछले 2 दिनों में इसी ऑपरेशन के दौरान एक करोड़ का इनामी नक्सली सुधाकर और 25 लाख का इनामी भास्कर भी मारा जा चुका है। इस ऑपरेशन में अब तक 2 टॉप कमांडर समेत 4 नक्सली ढेर किए जा चुके हैं। मुठभेड़ अभी भी जारी है। दोनों ओर से गोलीबारी हो रही है। शुक्रवार को सुरक्षाबलों ने 45 लाख रुपए के इनामी नक्सली भास्कर (45 साल) को मार गिराया। दोनों तरफ से भारी गोलीबारी हुई। जवानों ने भास्कर के शव के साथ ही ऑटोमैटिक हथियार भी बरामद किए हैं।

आयुश्री की काव्य कृति 'कचनार के दिन संभावनाओं से परिपूर्ण: कवि आलोक

भोपाल। सुपरिचित कवियत्री आयुश्री सक्सेना सिंह की प्रथम काव्य कृति 'कचनार के दिन' का गरिमामय समारोह में अतिथि द्वय प्रतिष्ठित कवि एवं लेखक आलोक श्रीवास्तव, प्रोफेसर और शायरा गौसिया खान की उपस्थिति में हुआ। कवियत्री आयुश्री सक्सेना सिंह की प्रथम काव्य कृति 'कचनार के दिन' लोकार्पण के साथ ही उनके पॉडकास्ट चैनल 'जिंदगी लालटेन' का भी प्रीमियर भी अतिथियों ने किया।

इस अवसर पर कवि आलोक श्रीवास्तव ने अपने उद्बोधन में कहा कि 'आयुषीश्री यह प्रथम काव्य कृति संभावानाओं से भरी हुई है। हर एक कविता अपने आप में समय की बात करता है। निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि कवि आयुषी समय के पार देखती हैं।' प्रोफेसर गौसिया खान ने कविताओं से ज्यादा भावनाएं व्यक्त की हैं। इसमें हमें जिंदगी और उसके अलग अलग रंगों से रूबरू होने का मौका मिलता है। भारतीय परम्परा के अनुरूप लोकार्पण समारोह के आरंभ में अतिथियों का स्वागत किया गया।

आयुषीश्री सक्सेना का 'कचनार के दिन' के रचनात्मक पक्ष पर कहना था कि उनका यह पहला कविता संग्रह है।

देवी अहिल्या बाई त्रिशताब्दी राज्य जयंती वर्ष समारोप कार्यक्रम

भोपाल। लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर त्रिशताब्दी जयंती वर्ष के अवसर पर समारोप कार्यक्रम का आयोजन शुक्रवार को बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल के ज्ञान विज्ञान भवन में आयोजित किया गया। आयोजन लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर त्रिशताब्दी जयंती वर्ष समारोह समिति और विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में दौलतराम इंडस्ट्रीज के प्रबंध निदेशक सीपी शर्मा उपस्थित रहे।

मुख्य वक्ता अश्विनी उपाध्याय ने कहा कि समकालीन विकृतियों को दूर करने के लिए लोकमाता देवी अहिल्या बाई होल्कर के अद्भुत न्याय शासन, मंदिर तथा आर्थिक प्रणाली से सीखना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। उनके काल में मंदिरों को विकास का केंद्र बनाया गया।

मुख्य अतिथि सीपी शर्मा ने कहा कि मैं सरकार को धन्यवाद देता हूँ कि लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर त्रिशताब्दी जयंती वर्ष के कार्यक्रमों के माध्यम से उनके

योगदान को जन जन तक पहुंचाया गया। विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. एसके जैन ने श्रोताओं को प्रोत्साहित किया कि वह अहिल्याबाई की जीवन चरित्र को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य करें।

कार्यक्रम का आरंभ लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर पर केंद्रित समूह नृत्य नाटिका के प्रदर्शन से हुआ। यह नाट्य प्रस्तुति सरस्वती कत्थक कला केंद्र की रूपाली सोनी के नेतृतव में किया गया।

इस अवसर पर समारोह समिति की श्रीमती प्रियंदा भसीन ने स्वागत वक्तव्य में कहा कि आज समाज में व्याप्त विकृतियों को दूर करने के लिए लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर आदर्शों को याद करना तथा उस पर चर्चा करना आवश्यक है। इस अवसर समिति की प्रांत की सचिव डॉ. वंदना गाँधी ने समारोह समिति की वार्षिक गतिविधियों की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

इस अवसर पर लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर पर आधारित तीन महत्वपूर्ण पुस्तकों, शिरोमणि दुबे द्वारा रचित पुस्तक दीपशिखा अहिल्याबाई, डॉ रचना चौहान की पुस्तक हिंदू समृद्धि देवी अहिल्याबाई होलकर तथा सुश्री आयुषी जैन द्वारा रचित बहु आयामी व्यक्तित्व अहिल्या देवी भाग 2 का विमोचन किया गया।

समंदर में बढ़ी साख, इंडियन नेवी में शामिल होगा अर्नाला

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सेना अपनी ताकत में लगातार इजाफा कर रही है, ताकि वक्त पड़ने पर दुश्मन को मुंहतोड़ जवाब दिया जा सके। इसी कड़ी में भारतीय नौसेना 18 जून को विशाखापत्तनम के नौसेना डॉकयार्ड में पहले 'एंटी-सबमरीन वारफेयर शैलो वाटर क्राफ्ट' अर्नाला अपने बेड़े में शामिल करेगी। अर्नाला उन 16 छोटे वॉरशिप्स में से एक है, जिन्हें नेवी में कमीशन किया जाना है। इन वॉरशिप्स को समुद्र तटों पर एंटी-सबमरीन लड़ाइयों और छोटे स्तर के समुद्री अभियानों के लिए तैयार किया गया है। इन सभी को 12,622 करोड़ रुपए की लागत से भारत में ही तैयार किया गया है। आईएनएस अर्नाला

की तैनाती से भारत की तटीय सुरक्षा मजबूत होगी और हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री ताकत और आत्मनिर्भरता को नई ऊंचाइयां मिलेंगी। नौसेना ने कहा कि 1490 टन से अधिक वजन का 77.6 मीटर लंबा भारतीय नौसेना का यह सबसे बड़ा डीजल इंजन-वॉटरजेट संयोजन से चलने वाला युद्धपोत है। अर्नाला, सतह पर सर्विलांस, सर्च और रेस्क्यू मिशन में भूमिका निभाने के लिए उपयुक्त हैं। इसके अलावा यह समुद्र में कम तीव्रता वाले अभियानों में भी सहायक होगा। अर्नाला का नाम महाराष्ट्र के वसई में स्थित अर्नाला किले के आधार पर रखा गया है।

सिंधु जल संधि पर पाकिस्तान ने भारत को भेजे हैं चार लेटर

- पानी देने की गुहार लगाई, एक चिट्ठी ऑपरेशन सिंदूर के बाद भी भेजी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सिंधु जल संधि बहाल करने को लेकर पाकिस्तान ने अब तक भारत को चार लेटर भेजे हैं। एक अंग्रेजी चैनल ने सूत्रों के हवाले से लिखा कि इन चार लेटर में से एक ऑपरेशन सिंदूर के बाद भेजा गया है। सूत्रों ने बताया कि ये चार पत्र पाकिस्तान के जल संसाधन मंत्रालय के सचिव सैयद अली मुर्तजा ने जल शक्ति मंत्रालय को भेजे थे।

सुपर स्पेशलिटी अस्पताल रीवा में नव नियुक्त 21 कर्मचारियों को उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने सौंपे नियुक्ति पत्र

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने सुपर स्पेशलिटी चिकित्सालय रीवा में नव नियुक्त पैरा-मेडिकल स्टाफ को नियुक्ति पत्र सौंपे। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि पैरा मेडिकल स्टाफ का योगदान स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण है। राज्य सरकार बेहतर कार्यस्थल परिस्थितियों के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि इस समारोह में हम उन योद्धाओं को सम्मानित कर रहे हैं, जो स्वास्थ्य सेवाओं में अहम भूमिका निभाते हैं। यह नियुक्ति पत्र सिर्फ एक दस्तावेज नहीं, बल्कि आपके जीवन में एक नई जिम्मेदारी का प्रतीक है। पैरा मेडिकल स्टाफ कर्तव्यों का पालन करते हुए मरीजों की देखभाल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है, जिससे पूरे समाज को लाभ होता है।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने कहा कि प्रदेश सरकार स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के लिए निरंतर प्रयासरत है। सरकार का लक्ष्य है कि राज्य के हर नागरिक को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराई जाएं। पैरा मेडिकल स्टाफ का योगदान स्वास्थ्य सेवा प्रणाली को सशक्त बनाने में बहुत ही अहम है। उनकी मेहनत और समर्पण से राज्य की स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार आ रहा है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने समारोह में 21 पैरा मेडिकल स्टाफ को नियुक्ति पत्र सौंपे। उन्होंने सभी नव नियुक्त कर्मचारियों को उनके नए कार्य की सफलता के लिए शुभकामनाएं दी और उम्मीद जताई कि वे अपने कर्तव्यों को पूरी निष्ठा से निभाएंगे। अधीक्षक सुपर स्पेशलिटी अस्पताल डॉ. अक्षय श्रीवास्तव, अधीक्षक संजय गांधी अस्पताल डॉ. राहुल मिश्रा सहित अन्य स्टॉफ उपस्थित रहे।

हिनौती गौधाम के निर्माणाधीन कार्यों को समय सीमा में करें पूर्ण : उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने रीवा के हिनौती गौधाम के सुचारू संचालन तथा निर्माणाधीन सभी कार्यों को पूरी गुणवत्ता के साथ समय सीमा में पूर्ण करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि वर्षा से पूर्व कार्यों को इस स्थिति तक ले आएं जिससे वर्षाकाल में कार्य प्रभावित न हो। सर्किट हाउस रीवा में आयोजित समीक्षा बैठक में उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि हिनौती गौधाम के लिए लालगांव से पहुंच मार्ग के दोनों तरफ सघन वृक्षारोपण कराएं तथा पहुंच मार्ग को दुरूस्त करने का कार्य करें। उन्होंने गौधाम में वर्षाकाल में वृक्षारोपण किए जाने के भी निर्देश अधिकारियों को दिए। उप मुख्यमंत्री ने गौधाम में गौ सेवकों व अन्य स्टाफ की नियुक्ति कर गौधाम के व्यवस्थित संचालन के लिए भी निर्देशित किया। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि जन सहयोग से प्रारंभ की गई यह गौशाला अब गौधाम का रूप ले रही है। सभी के सहयोग से और शासन से प्राप्त राशि से मास्टर प्लान के अनुसार गौधाम में गौवंश के लिए शेड, सड़क, पानी के हौज, भूसा शेड आदि के कार्य प्रगतिरत हैं। प्रशासनिक भवन/गेस्ट हाउस भी निर्माणाधीन है। सभी कार्य नियत समय पर पूरे हो जाएंगे और यह गौधाम प्रदेश का विशिष्टतम गौधाम बनेगा। विधायक मनगवां इंजीनियर श्री नरेन्द्र प्रजापति, कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल, आयुक्त नगर निगम डॉ सौरभ सोनवड़े, सीईओ जिला पंचायत मेहताब सिंह गुर्जर सहित विभागीय अधिकारी और स्थानीय जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

सरकारी अस्पतालों में आज 3 घंटे ओपीडी

भोपाल। शासकीय स्वास्थ्य संस्थाओं में आज सुबह 9:00 बजे से दोपहर 12.00 बजे तक ओपीडी संचालित होगी। इस सम्बन्ध में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भोपाल डॉ प्रभाकर तिवारी ने 8 जून रविवार को ओपीडी में नियमित दिवसों की भांति सभी सेवाएं देने का आदेश जारी किया है। दो दिवस निरंतर अवकाश होने की स्थिति में द्वितीय अवकाश के दिन ओपीडी संचालित किए जाने के संबंध में लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग द्वारा निर्देश दिए गए हैं। 7 जून को इदज्जुहा और 8 को रविवार का अवकाश है।

लगातार दो दिन के अवकाश होने के कारण मरीजों को उपचार लेने में असुविधा न हो, इसे देखते हुए मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय भोपाल द्वारा 3 घंटे की ओपीडी संचालित रखने के निर्देश दिए जारी किए गए हैं । चिकित्सकों और पैरामेडिकल स्टाफ को भी ड्यूटी पर उपस्थित रहने के लिए निर्देशित किया गया है।

परिक्रमा

सर्जरी करते समय राहुल के हाथ कांपेंगे तो नहीं ?

अरुण पटेल

प्रबंध संपादक, सुबह सवेरे

लोकसभा में प्रतिपक्ष के नेता राहुल गांधी इन दिनों अक्सर कांग्रेस के संगठन सृजन अभियान पर विशेष जोर दे रहे हैं और इस मामले में उन्होंने अभी तक गुजरात, मध्यप्रदेश और हरियाणा के नेताओं की अच्छी-खासी क्लास ली और उन्हें इशारों-इशारों में काफी कुछ खरी-खोटी सुनाई साथ ही भविष्य की राह भी दिखायी। लाख टके का सवाल यह है कि कांग्रेस में बड़ी सर्जरी करते समय अपने और परायों को देखकर राहुल के हाथ कांप तो नहीं जायेंगे। उन्हें एक ऐसे कुशल सर्जन की भूमिका अदा करना होगी जिसमें आपरेशन करते समय कोई अपने अतिप्रिय चेहरे के सामने आने पर, जो कांग्रेस को रसातल में पहुंचाने के लिए असली कारण रहे हैं, उनके चेहरे देखकर हाथ कांपे नहीं। क्योंकि अब राज्यों में कांग्रेस की स्थिति धीरे-धीरे कमजोर हो रही है और उसे मजबूती होम्योपेथी की मीठी गोली से नहीं मिलेगी बल्कि चीर-फाड़ करना ही होगी, अन्यथा कोई खास नतीजा नहीं निकलेगा।

राहुल गांधी कांग्रेसजनों से रुबरु होते समय अक्सर घोड़े का जिक्र करते हैं और इसमें वे शादी के घोड़े और रेस के घोड़े का उल्लेख करते हैं, लेकिन हाल ही में जबसे राजधानी भोपाल आये तो उन्होंने लंगड़े घोड़े का जिक्र भी कर दिया और इसको लेकर सियासी हल्कों में तलवारें खिंच गयीं, यहां तक कि उनके पुराने मित्र और अब मोदी सरकार में काबीना मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया भी मैदान में कूद पड़े और उन्होंने लंगड़े घोड़े शब्द पर आपत्ति जताई। लेकिन वास्तव में कांग्रेस में ऐसे नेताओं की भरमार है जो अपनी अंध-महत्वाकांक्षाओं के घोड़े विपरीत दिशाओं में दौड़ाते रहते हैं, क्या ऐसे नेताओं पर लगाम लगाने में राहुल सफल हो पायेंगे। कांग्रेस में नेताओं की गणेश परिक्रमा करने वाले कार्यकर्ताओं की बहुतायत है और ऐसे लोग ही कई बार मौका मिलते ही सारी मलाई खाने पर टूट पड़ते हैं, लेकिन नेताओं से कटे और जमीन से जुड़े उन कार्यकर्ताओं की वास्तविक पहचान क्या हो पायेगी जो अपने सामर्थ्य पर किसी भी विपरीत परिस्थिति में भी मैदान में डटे रहते हैं और अपने हितों को लेकर सत्ता के साझेदार नहीं बनते। वहीं दूसरी ओर अवसर मिलते ही गणेश परिक्रमा करने वाले कार्यकर्ताओं और नेताओं की पौ बारह हो जाती है और इससे जो असली कार्यकर्ता है वह किनारे लग जाता है। कांग्रेस

अध्यक्ष जीतू पटवारी, नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार और उपनेता हेमंत कटारे भले ही मैदान में नजर आ रहे हों लेकिन मौके पर कांग्रेस के मैदानी कार्यकर्ताओं को टंगड़ी मारकर जो लंगड़ा घोड़ा बना देते हैं क्या ऐसे लोगों को वे चिन्हित कर उन्हें किनारे लगा पायेंगे ।

राहुल गांधी अक्सर कहते रहे हैं कि कभी-कभी शादी के घोड़े को रेस में दौड़ा देते हैं और रेस वाले घोड़े से शादी में काम ले लेते हैं। बीमारी के लक्षण तो उन्होंने पहचान लिए हैं लेकिन इस प्रकार के कामों में महारत हासिल असरदार नेताओं को क्या राहुल बेअसर कर पायेंगे। लंगड़े घोड़े से प्रारम्भ हुई सियासत में काली भैंस का भी प्रवेश हो गया है। प्रदेश में कांग्रेस के संगठन सृजन अभियान के शुभारंभ पर राहुल गांधी ने लंगड़े घोड़े शब्द का प्रयोग किया था और इस शब्द को लेकर अब सियासी पारा कुछ चढ़ने लगा है। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया से लेकर अंतर्राष्ट्रीय पैरा स्वीमर पद्मश्री सत्येंद्र लोहिया ने भी आपत्ति दर्ज कराई है, जबकि कांग्रेस नेता राजेंद्र सिंह ने इस मामले में काली भैंस का भी प्रवेश करा दिया है। राहुल गांधी के अभिन्न मित्र रहे कांग्रेस के पूर्व महासचिव और वर्तमान में केंद्र सरकार में मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि विकलांग के स्थान पर सब लोग दिव्यांग कहते हैं और उन्हें भगवान का आशीर्वाद है पर राहुल अपशब्द का प्रयोग करते हैं, आखिर वे किस हद तक जायेंगे। सत्येंद्र लोहिया ने सोशल मीडिया पर संबंधित पोस्ट में राहुल को कहा कि लंगड़ा शब्द से दिव्यांगों के आत्मसम्मान को ठेस लगी है, वे स्पष्टीकरण दें और भविष्य में ऐसा न कहें। प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राजेंद्र सिंह ने जवाब दिया है कि लंगड़ा घोड़ा मुहावरा है, उन्होंने किसी विशेष के लिए नहीं कहा, कोई काली भैंस कहने पर बुरा माने तो हम क्या करें।

और यह भी

इन दिनों जातिगत जनगणना का मुद्दा सुर्खियों में है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जातिगत जनगणना कराने विषयक निर्णय के बाद इसका श्रेय लेने की होड़ मची है। कांग्रेस नेता इसे राहुल गांधी की जीत बता रहे हैं और मान रहे हैं कि राहुल के दबाव में आकर ही यह कदम उठाया गया है। जातिगत जनगणना की तिथि के ऐलान के बाद प्रदेश भाजपा कार्यालय में अनुसूचित जाति मोर्चे की प्रदेश स्तरीय बैठक हुई जिसमें प्रदेश भाजपा अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि जनगणना के दौरान देश विरोधी ताकतें बरगलाने की कोशिश करेंगी लेकिन सदस्यों को सतर्क रहना है। कांग्रेस को अपने निशाने पर लेते हुए शर्मा ने कहा कि डॉ. बाबा साहब आम्बेडकर को कांग्रेस ने केवल अपमानित किया है ये सभी जानते हैं। अनुसूचित जाति मोर्चा के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. भोला सिंह का कहना था कि कांग्रेस ने लोकसभा चुनाव के दौरान अनुसूचित जाति समाज को संविधान के नाम पर भ्रमित किया तथा उसने यह दुष्प्रचार किया कि यदि भाजपा सत्ता में आई तो संविधान बदल देगी। मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. कैलाश जाटव ने बताया कि मोर्चा पदाधिकारी हर जिले में 25 लोग चिन्हित किये जायेंगे जो पांच-पांच घरों में जायेंगे और उन्हें बतायेंगे कि भाजपा सरकार ने डॉ. आम्बेडकर के लिए क्या-क्या किया। यह माना जा रहा है कि देश के आजाद होने के बाद पहली बार जातिगत जनगणना में पार्टी पूरी तरह चौकन्ना है ताकि राजनीतिक नुकसान न हो। क्योंकि राहुल गांधी जिसकी जितनी संख्या उसकी उतनी भागीदारी की बात लम्बे समय से कर रहे हैं।

पंचायतों में जल संरक्षण एवं पौधारोपण के कार्य कराएं पंच-सरपंच : मंत्री श्री पटेल

नर्मदा परिक्रमा पथ की पंचायतों में 'रेवा आश्रम' सामुदायिक भवन बनाए जायेंगे

भोपाल (नप्र)। पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने शनिवार को टिमरनी में सरपंच सम्मेलन में कहा कि पंचायतों के पंच, सरपंचों अपनी अपनी पंचायत क्षेत्र में अधिक से अधिक पौधे लगाएं, और जल स्त्रोतों के संरक्षण के कार्य कराएं। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि पंचायतों में विकास कार्यों के लिए धन की कोई कमी नहीं है। उन्होंने कहा कि पिछले वर्षों में सरकार ने पंचायतों के अधिकार भी बढ़ाए हैं और खर्च की सीमा भी बढ़ाई है। पंचायतो को विकास कार्यों के लिए पहले से अधिक राशि आवंटित की जा रही है।

मंत्री श्री पटेल ने कहा कि सरपंच ईमानदारी से कार्य करें। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के नए प्रावधानों के तहत अब पुल पुलिया पहले से अधिक ऊंचाई के बनाए जाएंगे। उन्होंने कहा

कि हरदा जिले में 500 से अधिक आबादी की 15 बस्तियां चिन्हित की गई है जहां पर प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत नई सड़कें निर्मित की जाएगी। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि हरदा जिले में 14 नए पुल पुलिया भी इस योजना के तहत निर्मित करने के लिये स्वीकृत किए गए हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में 247 नदियों का उद्गम स्थल है। इसके बावजूद प्रदेश के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में कुओं और ट्यूबवेल का जलस्तर गिरता जा रहा है। आज जरूरत जलस्त्रोतों के संरक्षण और पौधारोपण की है। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि नर्मदा परिक्रमा पथ की पंचायतो में 'रेवा आश्रय सामुदायिक भवन' बनाए जाएंगे।

इस अवसर पर पूर्व मंत्री श्री कमल पटेल जिला पंचायत अध्यक्ष श्री गजेंद्र शाह, उपाध्यक्ष श्री दर्शन सिंह गहलोत, पूर्व विधायक श्री संजय शाह, टिमरनी नगर परिषद के अध्यक्ष श्री देवेंद्र भारद्वाज तथा उपाध्यक्ष श्री राजा कौशल सहित विभिन्न जनप्रतिनिधि एवं अधिकारीगण भी मौजूद थे।

नदियों के उद्गमों को करें संरक्षित, इनमें होती है भरपूर ऊर्जा : मंत्री श्री पटेल

अजनाल नदी के उद्गम स्थल पर पूजा-अर्चना कर किया पौध-रोपण

भोपाल (नप्र)। पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने शनिवार को रहटगांव तहसील के ग्राम खूमी में स्थित अजनाल नदी के उद्गम स्थल पर पहुंचकर विधिवत पूजा-अर्चना की। मंत्री श्री पटेल ने अजनाल नदी के उद्गम स्थल पर वन विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में जन-प्रतिनिधियों के साथ पीपल, बरगद एवं नीम के पौधे लगाए। उन्होंने अधिकारियों को नदी के उद्गम स्थल के आसपास और अधिक पौधे लगाने, तथा लगाए गए पौधों को संरक्षित करने के निर्देश दिए।

मंत्री श्री पटेल ने कहा कि मध्यप्रदेश में सबसे अधिक नदियों के उद्गम स्थल हैं। हमारे प्रदेश को नदियों का मायका कहा जाता है। हमें नदियों के उद्गम स्थलों को संरक्षित करना चाहिए, नदियों के उद्गम स्थल पर भरपूर ऊर्जा होती है। उन्होंने कहा कि नदियों के आसपास ट्यूबवेल उत्खनन तथा वृक्षों की कटाई के कारण कई नदियां नष्ट होने के कगार पर हैं। नदियों के स्त्रोतों को जिंदा रखना जरूरी है। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि हम नदियों के स्त्रोतों को नष्ट कर रहे हैं और नहरों का पानी नदियों में डालकर खुश हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश में भरपूर नदियां होने के बावजूद यहां का जल-स्तर घटना चिंता का विषय है। उन्होंने कहा कि आज आवश्यकता नदियों के संरक्षण की है। ज़रूरी है कि नदियों के किनारे वृक्ष लगाएं। मंत्री श्री पटेल ने प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अधिकारियों को निर्देश दिए कि बड़वानी से

खूमी रोड के साइड शोल्डर भरवाएं।

इस अवसर पर पूर्व मंत्री श्री कमल पटेल, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री गजेंद्र शाह, उपाध्यक्ष श्री दर्शन सिंह गहलोत, जिला पंचायत सदस्य श्री ललित पटेल, पूर्व विधायक श्री संजय शाह, वन मंडल अधिकारी श्री अनिल चोपड़ा उपस्थित थे।

मप्र में कोरोना संक्रमित महिला की मौत

ऑपरेशन के दौरान 9 माह की गर्भवती की बिगड़ी थी हालत, प्रदेश में कुल मामले हुए 53

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में कोरोना संक्रमण से दूसरी मौत की खबर सामने आई है। यह घटना खरगोन जिले की 45 वर्षीय महिला के साथ हुई, जो इंदौर के एक अस्पताल में भर्ती थी। महिला 9 महीने की गर्भवती थी और उसकी डिलीवरी के दौरान सांस लेने में तकलीफ के चलते मौत हुई।

ऑपरेशन के दौरान बिगड़ी हालत

गुरुवार को, सिजेरियन डिलीवरी के ऑपरेशन के दौरान महिला को अचानक दौरे पड़ने लगे। उसकी बिगड़ती हालत को देखते हुए, उसे तुरंत सांस लेने में मदद देने वाली मशीन (इंट्यूबेशन) पर रखा गया। हालांकि, उसकी स्थिति लगातार गंभीर होती गई और उसकी मौत हो गई। बाद में जब उसकी कोरोना आरटी-पीसीआर जांच रिपोर्ट आई, तो वह पॉजिटिव पाई गई।

हालांकि, इंदौर के जिला स्वास्थ्य विभाग ने महिला की मौत का मुख्य कारण कोरोना संक्रमण नहीं, बल्कि सिजेरियन डिलीवरी के दौरान आई जटिलताओं को बताया है।

इंदौर में 38 कोरोना पॉजिटिव मरीज मिले

इंदौर में इस साल अब तक 38 कोरोना पॉजिटिव मरीज मिले हैं। इनमें से 8 मरीज बाहर के हैं। अभी तक जिन लोगों की ट्रैवल हिस्ट्री मिली है, वे या तो दूसरे शहर, राज्य से लौटे या फिर बाहर से इंदौर आए लोगों के संपर्क में आए थे। इनमें यूके, सिंगापुर, गोवा, दिल्ली, केरल, रायपुर, पुणे, मुंबई, अहमदाबाद आदि की हिस्ट्री रही।

प्रदेश में कोरोना की स्थिति

वर्तमान में, मध्य प्रदेश में कोरोना के 3 नए मामले दर्ज किए जाने के बाद कुल संक्रमितों की संख्या 53 हो गई है। वहीं, प्रदेश में सक्रिय मामलों (एक्टिव केस) की संख्या अब 32 है।

अप्रैल में हुई थी पहली मौत

इससे पहले, प्रदेश में कोरोना से पहली मौत का मामला 21 अप्रैल को इंदौर में ही सामने आया था। उस समय, कोविड संक्रमण के दो नए मामले मिले थे, जिनमें एक युवक और एक बुजुर्ग महिला शामिल थीं। दोनों को शहर के एक निजी अस्पताल में भर्ती किया गया था। दोनों मरीजों को पहले से ही अन्य गंभीर बीमारियां थीं। इनमें से बुजुर्ग महिला की हालत ज्यादा गंभीर थी, और उनकी मृत्यु हो गई थी।

भोपाल में कुल 9 केस, सीएमएचओ ने दी जानकारी

कोविड-19 डैशबोर्ड पर राजधानी भोपाल में तीन कोरोना केस दर्ज थे। हालांकि, राजधानी के सीएमएचओ (मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी) डॉ. प्रभाकर तिवारी का कहना है कि भोपाल में कुल तीन नहीं, बल्कि अब तक 9 कोरोना के मामले सामने आ चुके हैं। उन्होंने बताया कि अप्रैल में 1, मई में 3 और जून में 5 पॉजिटिव केस मिले हैं। वर्तमान में भोपाल में 4 सक्रिय मामले हैं, जिनमें से एक मरीज अन्य गंभीर बीमारियों के चलते अस्पताल में भर्ती है।

ईद की नमाज में देश-फिलिस्तीन के लिए मांगी दुआ

भोपाल में मुल्क की सलामती, इंसाफ और फिलिस्तीनी लोगों की हिफाजत के लिए उठे हाथ

भोपाल (नप्र)। राजधानी भोपाल में शनिवार को ईद-उल-अजहा (बकरीद) के मौके पर हजारों मुसलमानों ने नमाज अता कर मुल्क और फिलिस्तीन के लिए दुआ की। ईदगाह में शहरकाजी मुश्ताक अली नदवी, ताजुल मसाजिद में मौलाना हस्सान साहब ने नमाज पढ़ाई। नमाज के दौरान मुल्क की सलामती, इंसाफ के कयाम और बीमारों की शिफा, फिलिस्तीनी भाइयों की हिफाजत, उनकी भूख-प्यास और हालात को लेकर दुआ मांगी गई।

शहर की मोती मस्जिद, जामा मस्जिद, मस्जिद बिल्किस जहां (आरिफ नगर) सहित शहर की विभिन्न मस्जिदों में भी अपने निर्धारित समय पर नमाज अता की गई। शहर काजी मुश्ताक अली नदवी ने अमनो अमान और अच्छी बारिश के साथ ईद की नमाज का समापन किया। शहरकाजी मुश्ताक अली नदवी और ताजुल मसाजिद में मौलाना हस्सान साहब ने सूफियों, ऋषि-मुनियों और बुजुर्गों की मोहब्बत वाली राह पर चलाने की दुआ मांगी।

राजधानी भोपाल में ईद-उल-अजहा (बकरीद) पूरी अकीदत और एहतराम के साथ मनाई जा रही है। इस्लामी कैलेंडर के मुताबिक जिलहिज्जा की 10वीं तारीख को मनाई जाने वाली ईद की घोषणा शहरकाजी मुश्ताक अली नदवी ने बुधवार को मोती मस्जिद में मगरिब की नमाज के बाद चांद दिखने पर की थी।

ईदगाहों और मस्जिदों में आज सुबह से ही नमाज

अता की जा रही है। ईदगाह में नमाज का समय सुबह 6:30 बजे था, इसके बाद ताजुल मसाजिद में 6:45 बजे, जामा मस्जिद में 7 बजे, मोती मस्जिद में 7:15 बजे और मस्जिद बिल्किस जहां (आरिफ नगर) में 7:30 बजे ईद की नमाज अता की गई।

शहर काजी नदवी ने कहा कि कुर्बानी इस्लाम का एक अहम फर्ज है, लेकिन इसे सलीके और सलीम तरीके से अंजाम देना हर मुसलमान की जिम्मेदारी है। उन्होंने लोगों से अपील की है कि कुर्बानी के स्थान को चारों ओर से ढंका जाए, सफाई का विशेष ध्यान रखा जाए और प्रशासनिक नियमों का पालन किया जाए।

दुआ में शामिल थीं ये अहम बातें

- मुल्क में अमन-ओ-शांति और इंसाफ कायम हो, इसकी दुआ की गई।
- मुल्क की सरहदों और सलामती के दुश्मनों से हिफाजत की दुआ मांगी गई।
- बीमारों को शिफा और परेशान हाल लोगों को राहत देने की इल्तिजा की गई।
- फिलिस्तीन में जुल्म झेल रहे मासूमों, भूख-प्यास से जूझ रहे बच्चों और औरतों की राहत के लिए दुआ की गई।
- दुश्मनों के नेस्तनाबूद होने और मजलूमों को सब्र और राहत मिलने की कामना की गई
- उलेमा-ए-इकराम, सूफियों, ऋषियों और बुजुर्गों की तरह मोहब्बत और प्रेम से जीने की खता (तौफीक) फरमा।
- मुल्क में अमन, इंसाफ और भाईचारा कायम रहे।
- मजलूमों को सब्र और पूरी दुनिया में इंसानियत को फतह हासिल हो।

सेनाओं के शौर्य को समर्पित 'सिंदूरी अक्षर' कवि सम्मेलन

भोपाल (नप्र)। देश की रक्षा में अपने प्राणों की आहुति देने वाले वीर जवानों और जननायकों के शौर्य को शब्दों का सलाम देने के लिए आगामी सोमवार, 9 जून को राजधानी भोपाल स्थित रवींद्र भवन के हंसध्वनि सभागार में 'सिंदूरी अक्षर' अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। यह कवि सम्मेलन सायं 7 बजे से प्रारंभ होगा, जिसमें देशभर के प्रतिष्ठित कवि वीर रस और राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत रचनाओं की प्रस्तुति देंगे। कार्यक्रम का आयोजन मध्यप्रदेश शासन के संस्कृति विभाग द्वारा किया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव इस आयोजन में बतौर

डॉ. अनु सपन

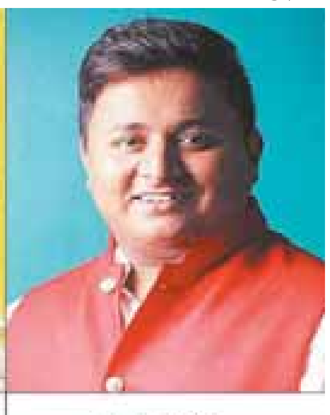

अमन अक्षर

मुख्य अतिथि उपस्थित रहेंगे।

संस्कृति संचालक एन.पी. नामदेव ने जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय सेनाएं केवल सीमा की रक्षा ही नहीं करतीं, बल्कि वे देश की अस्मिता, स्वाभिमान और संस्कृति की भी प्रहरी हैं। हाल ही में संपन्न 'ऑपरेशन सिंदूर' इसका सशक्त उदाहरण है, जिसने महिला शक्ति के सम्मान की रक्षा के लिए सेनाओं की संवेदनशीलता और प्रतिबद्धता को दर्शाया। कार्यक्रम जनसामान्य के लिए निःशुल्क रहेगा और इसमें भाग लेने के लिए किसी प्रकार का पंजीयन आवश्यक नहीं है। संचालक संस्कृति एनपी नामदेव ने दी जानकारी।

यह प्रसिद्ध कवि होंगे शामिल

डॉ. हरिओम पवार (मेरठ),
डॉ. सुरेन्द्र दुबे (रायपुर)
डॉ. जानी बैरागी (राजोद)
श्री शैलेन्द्र मधुर (प्रयागराज)
दिनेश दिग्गज (उज्जैन)
डॉ. अनु सपन (भोपाल)
अमन अक्षर (इंदौर)
सुमित मिश्रा (ओरछा)

पुस्तक समीक्षा

संध्या अग्रवाल
समीक्षक

ज़िंदगी का उजास- सामाजिक यथार्थ और भावनात्मक अनुभवों की उजली रेखा

'ज़िंदगी का उजास' नृपेन्द्र अभिषेक 'नृप' की पाँचवी कृति है, जिसमें चौदह कहानियों का संग्रह है। नृपेन्द्र अभिषेक 'नृप' युवा ऊर्जा से भरपूर एक प्रतिभाशाली लेखक हैं और साहित्य जगत में राष्ट्रीय स्तर पर उभरता हुआ एक दैदिप्यमान सितारा हैं। इनकी रचनाओं में एक अनोखी दृष्टि और साहित्यिक गहराई है एवं जीवन की वास्तविकता से भरे विभिन्न पहलुओं को उजागर करने की क्षमता है, जो पाठकों को आकर्षित कर, गहन चिंतन के लिए प्रेरित करती हैं। इनकी सरल और सहज भाषा शैली ने इन कहानियों को एक अद्वितीय आकर्षण प्रदान किया है।

प्रथम कहानी 'जिंदगी का उजास' मानसिक स्वास्थ्य संतुलन की महत्ता को रेखांकित करती है, जो समकालीन युग में अत्यधिक प्रासंगिक है। लेखक ने इस कथा के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के महत्व को उजागर किया है और पाठकों को अपने मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित किया है।

दूसरी कहानी 'त्याग का दीपक' एक पिता के त्याग और संघर्ष की मार्मिक कथा है, जो अपने बच्चों के लिए अपना जीवन समर्पित करता है। जिसमें माता-पिता और उनके बच्चे अभाव में पलते हुए, अपनी कड़ी मेहनत और जुनून से अपने लक्ष्य को पाने में अंततः सफल होते हैं।

तीसरी कहानी 'माटी की याद' ग्रामीण और शहरी जीवन के बीच के अंतर को मार्मिक ढंग से दर्शाती है। इस कथा में लेखक ने दिखाया है कि शहरों में रहने वाले लोग जीविका की विवशता के कारण ग्रामीण परिवेश की जड़ों से दूर हो जाते हैं। किन्तु अंततः वे अपनी जड़ों से जुड़े रहने का मार्ग पा ही लेते हैं।

चौथी कहानी 'गलत कौन' एक चिकित्सक और मरीज के बीच के द्वंद्व को गहराई से दर्शाती है। इस कथा में लेखक ने चिकित्सक के मनोविश्लेषण को बहुत बारीकी से दिखाया है, जिसमें वे अपने ऊपर आरोप लगाए जाने के प्रभाव के बावजूद सामाजिक हित के लिए अपनी सेवाएं देने को तैयार होते हैं। यह कहानी चिकित्सकों के सामने आने वाली चुनौतियों और उनके चिकित्सा के प्रति समर्पण को प्रदर्शित करती है।

पाँचवी कहानी 'किशोरावस्था का आकर्षण' किशोर मन की भटकाव, जटिलता और संवेदनशीलता को उजागर करती है। इस कथा में लेखक ने किशोरावस्था को एक चौराहे के रूप में दर्शाया है, जहाँ सही दिशा-दर्शन की आवश्यकता होती है ताकि समय रहते हुआ किशोर मन भटकने से बच सकें।

छठवीं कहानी 'सपनों का सरगम' में एक अद्वितीय प्रेम कहानी का वर्णन किया गया है, जिसमें मेघा और ईशान दो विभिन्न रुचियों के होते हुए भी एक दूसरे के प्रति गहरा प्रेम रखकर, एक दूसरे के सपनों और उद्देश्यों का सम्मान करते हैं।

सातवीं कहानी 'प्रेम का आभासी पुल' एक अद्वितीय और मार्मिक प्रेम कहानी जो तकनीक और कला के माध्यम से दो युवाओं के बीच के प्रेम को दर्शाती है। इस कहानी में प्रेम के आभासी पुल का सुंदर चित्रण किया गया है, जो कि एक सुंदर और अर्थपूर्ण संबंध को दर्शाता है। हमें प्रेम की शक्ति और सुंदरता की याद दिलाता है।

आठवीं कहानी 'भूख की तड़प' एक मार्मिक और वास्तविक चित्रण है, जो गरीबी और भूख के बीच जूझते एक व्यक्ति की कहानी को दर्शाती है। यह कहानी समाज में व्याप्त आर्थिक विसंगति को दर्शाता हुआ एक यक्ष प्रश्न है।

नवमीं कहानी 'भावनाओं का खेल' महानगरीय जीवन के बीच पनपी एक मार्मिक प्रेम कहानी है, जिसमें पिंकी और अभिषेक दो युवाओं के बीच भावनात्मक जुड़ाव को दर्शाया गया है। प्रेम, धोखा और पुनर्निर्माण के दौरान व्यक्तित्व निर्माण की दिशा में एक नए अध्याय की शुरुआत है। इसमें संदेश है कि गिरकर उठना गिरने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

दसवीं कहानी 'संघर्ष की उड़ान' एक प्रेरणादायक और संघर्षपूर्ण कहानी है जो एक लड़की की मंजिल को छूने की कहानी को दर्शाती है। मधु गरीबी में किस प्रकार दकियानूसी माहौल से जूझते हुए सबकी बातों को

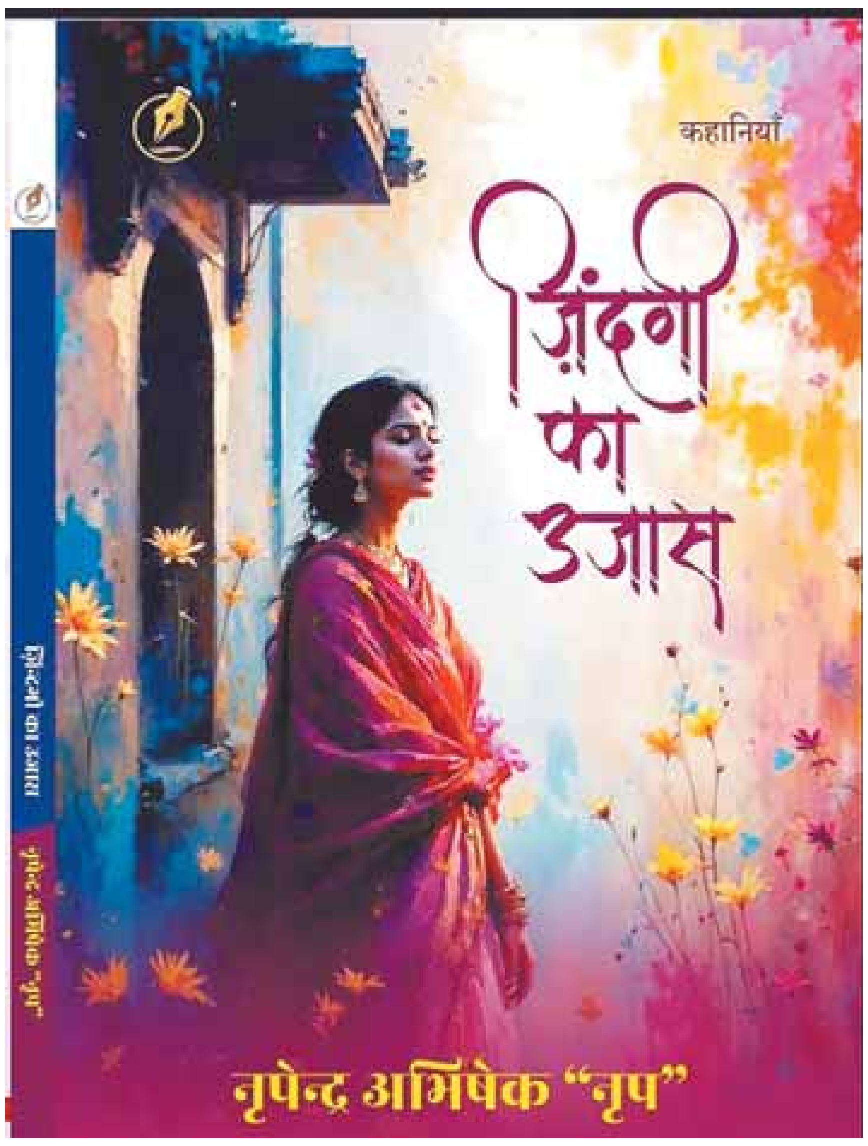

नजरअंदाज करती हुई अपने लक्ष्य को प्राप्त करती है। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक संदेश है। ग्यारवीं कहानी 'तेरा अक्स' कुछ कहानियाँ किताबों में नहीं, दिलों में लिखी जाती हैं........। यह पंक्तियां निश्छल प्यार की भावना, जिसमें एक दूसरे की स्वतंत्रता का सम्मान करते हुए जीवन के सच्चे अर्थ को समझने में मदद करती है। बारहवीं कहानी 'मिल गई रोशनी' सच्चाई और वास्तविकता के करीब है, इसमें यह संदेश कि है कि हम अपने आसपास के छोटे और लघु उद्योगों से सामान खरीद कर उनके जीवन स्तर को उठाने की पहल करें।

तेरहवीं कहानी 'अनोखा युद्ध' एक रोमांचक और भविष्यवादी चित्रण है जो वर्तमान में रोबोट और एआई की बढ़ती भूमिका को दर्शाता है। कहानी में आरव और ओमेक्स के बीच की वार्ता का जीवंत चित्रण, कल्पनाशीलता और लेखन कौशल बहुत ही उत्कृष्ट है। उनकी कहानी में वर्तमान समय के शोध और भविष्य की संभावनाओं का बहुत ही अच्छा मिश्रण है। कहानी पढ़ने से पाठक एक अलग ही दुनिया में पहुँच जाते हैं। चौदहवीं कहानी 'बसंती दुपट्टा' में एक अनोखे और कोमल प्रेम की भावना को दर्शाया गया है। इस कहानी में एक युवती के प्रेमी के लौट आने की घटना को प्रकृति के साथ जोड़कर दिखाया गया है, जो बहुत ही वास्तविक और सुंदर प्रतीत होता है।

हर कहानी में एक विशेष बात यह है कि इनमें निहित सामाजिकता और सकारात्मकता से एक आशा से भरा संदेश मिलता है। इनकी यह कृति एक मील का पत्थर है। यह पुस्तक जिंदगी के विभिन्न पहलुओं पर एक मार्मिक और विचारोत्तेजक चर्चा प्रस्तुत करती है, जो पाठकों को जीवन के अर्थ और उद्देश्य के बारे में सोचने पर मजबूर करती है।

पुस्तक: जिंदगी का उजास
लेखक: नृपेन्द्र अभिषेक 'नृप'
प्रकाशक: समृद्ध पब्लिकेशन, नई दिल्ली
मूल्य: 260 रुपये

कहानी

तनुजा चौबे

अक्षमता

जिस दिन कॉलेज का पहला दिन था, वह आखिरकार आ ही गया। तीन लड़के और दो लड़कियाँ एक छोटे-से समूह में बैठे थे। अभी तो मंदिरा कॉलेज में नई-नई आई थीं। शहर के प्रतिष्ठित और संभ्रांत परिवारों के बच्चे इसी कॉलेज में पढ़ते थे।

समूह के हर लड़के ने मंदिरा से हाथ मिलाया मैं गौरव अजीब लिजलिजा स्पर्श कुछ पल के लिए उसके ठंडे हाथ से उसके हाथ की संवेदना जैसे खो गई

मंदिरा ने धीरे से बोतल से पानी पिया और कुछ बूँदें अपने हाथ पर डाल लीं – जैसे वह स्वयं को चेतना देना चाह रही हो। तभी उसकी दृष्टि गौरव पर पड़ी। वह लड़कियों की तरह हाथ झटककर बातें कर रहा था। चेहरे पर नाममात्र की दाढ़ी, गोरा रंग, गुलाबी होंठ और आकर्षक, किंतु कहीं अधूरा-सा चेहरा – उसमें कुछ मिसिंग था।

कॉलेज के शुरुआती दिनों का समय कुछ असमंजस से भरा था। एक दिन कैंटीन में जब मंदिरा पार्थ के साथ कॉफी पी रही थी, तब पार्थ ने उसे गौरव के बारे में बताया। युवाओं की भाषा में उसे 'गे' कहा जाता था।

कॉफी पीने के उपरांत पार्थ ने अपनी रॉयल एनफील्ड उठाई। उसकी गिनती कॉलेज के सबसे आकर्षक युवकों में होती थी। जब मंदिरा उसके पीछे बैठती, तो दोनों की जोड़ी को देखकर कॉलेज की तमाम लड़कियाँ मुड़-मुड़कर देखा करतीं।

मंदिरा भाँप चुकी थी कि पार्थ के मन में उसके प्रति विशेष भावनाएँ थीं। किंतु अभी कॉलेज का प्रारंभ ही था – वह किसी बंधन में नहीं बंधना चाहती थी। फिर भी, जब भी कहीं बैठते, पार्थ उसके कंधे पर हाथ रखता, कभी गाल पर चुटकी काटता, कभी कमर में बाँह डालकर घूमता। बिना अधिकार के भी उसका अधिकार स्पष्ट झलकता था।

इधर, मंदिरा यह भी अनुभव कर रही थी कि गौरव, जो उनके ही समूह का सदस्य था, उसके समीप आने का प्रयत्न करता रहता। पर न जाने क्यों, मंदिरा का मन उसे देखकर चिढ़ जाता। वह आज तक उसके हाथ के उस हल्के-से लिजलिजे स्पर्श को नहीं भूली थी।

समूह में निरंतर साथ रहने के कारण मंदिरा इतना समझ चुकी थी कि गौरव बड़े सलीके से सभी के छोटे-मोटे कार्य कर देता था – सबके लिए कॉफी लाना, पैसे इकट्ठा कर बिल देना, किसी का प्रोजेक्ट पूर्ण करवाना, प्रेज़ेंटेशन तैयार करना – और यह सब वह सदैव मुस्कराकर करता। किंतु मंदिरा को उसकी यही मुस्कान खलती थी। पार्थ और अन्य मित्रों के कारण वह उसे अनदेखा करती रहती थी।

हालांकि, गौरव के मन में मंदिरा के लिए एक अलक्षित स्नेह अंकुरित हो चला था। उसकी प्रत्येक छोटी-छोटी बात पर गौरव का मन ठहर जाता। वह मंदिरा की दृष्टि में स्थान पाने हेतु अनजाने में स्वयं को सिद्ध करने में रत रहता – शायद इस आशा में कि उसका अपनत्व कभी मंदिरा के हृदय को भी स्पर्श कर जाए।

उस दिन कॉलेज के उपरांत सबने पब जाने की योजना बनाई। वहाँ डांस फ्लोर भी था। सभी अपने-अपने साथी के साथ जाने वाले थे। गौरव के लिए सबने हँसते हुए कहा –

''चल, तू भी चल! तू तो हमारी चमेली दोस्त है। सब पार्टनर बदल-बदल कर तेरे साथ डांस कर लेंगे।''

सभी मित्रों ने तकीला की शॉट्स ले रखी थीं। पार्थ ने कुछ अधिक ही पी ली थी। डांस फ्लोर पर नशे की झोंक में उसने मंदिरा को खींच लिया और समीप से डांस करने लगा। जैसे ही पार्थ ने अपना चेहरा मंदिरा के और अधिक निकट लाया, किसी ने सहसा जोर से धक्का दे दिया।

पार्थ ने पलटकर देखा – गौरव था। किंतु वह तुरंत दूसरी लड़की की ओर मुड़ गया और गौरव मंदिरा के सम्मुख आ खड़ा हुआ। हल्के नशे में डूबी मंदिरा का मन भावुक हो उठा। उसे गौरव पर करुणा सी आ रही थी। उसने डांस करते हुए गौरव की ओर देखा – वह अत्यंत स्नेह से उसे देख रहा था और नशे में होते हुए भी अपनी मर्यादा में दूरी बनाए हुए डांस कर रहा था।

जहाँ पार्थ उसे खींच रहा था, वहाँ गौरव ने दूरी बनाए रखी थी। अनजाने में जब मन ने दोनों की तुलना की, तो उसे वह दूरी कहीं अधिक सम्मानजनक प्रतीत हुई। आज गौरव की आँखों में उसने एक निस्वार्थ स्नेह देखा। उसके मन में ग्लानि और लज्जा का भाव उमड़ आया कि उसने उसके साथ डांस क्यों किया। किंतु पार्थ के सम्मोहन में उसने गौरव की दूरी को उसकी शारीरिक सीमा समझ लिया।

अब गौरव उसके आस-पास मंडराने लगा – कभी कोल्ड ड्रिंक, कभी कॉफी, कभी पानी की बोतल भरकर लाता और उसके छोटे-मोटे कार्य करता रहता। मंदिरा अनुभव कर रही थी कि उसके प्रति गौरव के मन में कुछ विशिष्ट भावनाएँ पनप रही थीं – और उतनी ही वह स्वयं को उससे दूर करने लगी थी।

पार्थ ने एक बार हँसते हुए कह भी दिया –

''अच्छा है, तुम्हारे साथ रहेगा तो शायद उसकी कुछ और भावनाएँ जागृत हो जाएं।'' आज सभी मित्रों ने नाइट स्टे का कार्यक्रम बनाया था। दस-बारह लोग शहर से बाहर किराए की एक संपत्ति पर पहुँचे। सांझ धीरे-धीरे रात्रि में परिवर्तित हो रही थी। पुनः वही नृत्य और बीयर आरंभ हुई।

लड़कियाँ पृथक कमरों में और लड़के पृथक कमरों में रुकने वाले थे, किंतु नशा और युवावस्था के उफान ने सभी बंधनों को तिलांजलि दे दी। पार्थ मंदिरा को अपने कमरे की ओर ले जाने लगा, तभी गौरव बीच में आ गया। पार्थ ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा – मानो उसकी शारीरिक सीमा पर कटाक्ष कर रहा हो – और हटने का संकेत किया।

गौरव ने मंदिरा की ओर देखा। उसकी आँखों में रुक जाने का मौन आग्रह था। किंतु नशे में डूबी मंदिरा को पार्थ का साथ अधिक आकर्षक प्रतीत हो रहा था।

अगले दिन वह गौरव से आँखें नहीं मिला पा रही थी। पार्थ के चेहरे पर कोई मलाल नहीं था, परंतु मंदिरा के मन में लज्जा का भारीपन था।

गौरव, अपनी शारीरिक सीमाओं के बावजूद, नैतिकता नहीं भूला था। उसने दोनों को रोकने का पूरा प्रयास किया था। किंतु दोनों अपनी वासना और शक्ति के नशे में नैतिकता को तज चुके थे।

गौरव अपनी हल्की-फुल्की शारीरिक समस्याओं के उपचार हेतु प्रायः एक महिला चिकित्सक के पास जाया करता था। उसी दिन मंदिरा भी वहाँ पहुँची। वहाँ गौरव मिला – उसके चेहरे पर कोई आश्चर्य नहीं था। वह अपनी सामान्य शारीरिक समस्या के उपचार के लिए वहाँ था। और मंदिरा – अपनी पूरी शारीरिक सामर्थ्य के दुष्परिणाम के निवारण के लिए।

आज दोनों वहाँ खड़े थे – भिन्न-भिन्न 'शारीरिक कमी' के उपचार हेतु। प्रश्न यह था-

कौन किस कमी से अधिक लज्जित था? गौरव – अपनी शारीरिक अक्षमता से? या मंदिरा – अपनी मानसिक और शारीरिक असंयमता से?

मंदिरा के भीतर कहीं गहरे, पहली बार नैतिकता का आहत स्वर स्पष्ट सुनाई दे रहा था।

लघुकथा

अवकाश

डॉ. श्यामबाबू शर्मा

इंदू मैम की क्लास के बच्चे नई कक्षा में पहुंच गए। मॉर्निंग असेंबली में प्राचार्य महोदय ने बच्चों को हार्ड वर्क की सीख दी। उसके बाद अभिभावक अध्यापक मेल मिलाप। दोनों का समन्वय समुच्चय मिलकर ही भावी पीढ़ी को शिक्षित संस्कारित कर सकेगा। बच्चे अपने अपने क्लासेज में। छुट्टियों के पहले का आखिरी दिन। सबके अपने प्रोग्राम। हालिडे होमवर्क देकर ग्रीष्मावकाश। यह पहली दफा था जब अगली कक्षा का कुछ भी पढ़ाया ना गया। सूचनानुसार इनकी पुस्तकें जून अंतिम सप्ताह में बाजार में उपलब्ध होने की बात कही गई। समय का सदुपयोग किस रुप में करें? कुछ अभिभावक और बच्चों ने चिंता जाहिर की।

क्या आप लोगों ने किताबें बदलने की सिफारिश की?

बड़े बड़े लोग सोच समझकर निश्चित किए होंगे?

पहले ही सिलैबस कम कर दिए फिर दुबारा काहे?

पी टी एम में अलग-अलग अभिभावकों के अलग-अलग मत और प्रश्न।

समर्थ ने इंदू मैम से विनम्र आग्रह किया-

बताइए न मैम बुक्स बदलने का आइडिया किसका है? हम लोग छुट्टियों में क्या करेंगे? ब्रिज कोर्स में तो सब पिछली क्लासेज का है..!

अवकाश की बेल बज रही थी। इंदू मैम और समर्थ का सवाल।

हां बच्चों बुक्स बदलने से बहुत बेनिफिट्स हैं। उन लोगों ने सोच विचार कर ही डिसीजन लिया होगा। हम लोग इसमें इनवाल्व नहीं हैं। यह प्लानिंग बहुत बड़े लोग करते हैं। वह कैसे कहतीं कि जिनका किताबों से साबका नहीं वे किताबें और सिलेबस बदल रहे हैं।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

भगवान की बेरुखी से मुंगीलाल बना नेता

व्यंग्य

श्याम कुमार कोलारे

गाँव में एक हमारे परम मित्र है मुंगीलाल। ये हमारे परम मित्र तो है ही बाद में हमारे गुरु बन गए। हमारी पढ़ाई-लिखाई को एक तरफा करके भाई वे ही हमसे इतना दूर निकल गए कि अब उनसे निलने के लिए जुगत लगानी पड़ती है। नाम तो ऐसा जैसे कोई पंडित जी के बेटे हों, पर हालात ऐसे जैसे भगवान ने खुद लिखाई में स्याही कम कर दी हो। न काम करते, न काज के, बस दिन भर आसमान ताकते हुए भगवान को कोसते रहते थे। चेहरे पर ऐसा दर्द, मानो पकोड़ी के साथ चटनी न मिली हो!

मुंगीलाल का एक ही राग था- 'भगवान ने मेरे साथ अन्याय किया है।' वो कहते, 'जिसके पास पहले से पैसा है, भगवान उसी की जेब में और पैसा ठूँसता है। और हमारे जैसे बेचारे, जो पहले ही फटेहाल हैं, उनके लिए केवल आधे पेट रोटी और तन पर चिथड़े हैं।

एक दिन हमने कहा, मुंगीलाल, भगवान को रोज़ गाली देने से पेट नहीं भरता। कुछ काम-धंधा कर लो।'

मुंगीलाल बोले, 'काम? भगवान ने दिया क्या है जो मैं करूँ? ऊपर से मेहनत करूँ और फिर भी कुछ न मिले? भगवान अब अफसर हो गए हैं–बिना रिश्वत लिए कोई फाइल आगे नहीं बढ़ाते। और हम गरीबों की फाइल तो जन्म के समय से ही पेंडिंग है।' अब गाँव में दो तरह के लोग थे–एक वो जो मुंगीलाल जैसे थे, और दूसरे वो जिनके पास धन, दौलत, गाड़ी, बंगला और दिखावे की मुस्कान थी। मतलब 90 प्रतिशत जनता मुंगीलाल क्लब में थी, और 10 प्रतिशत 'भगवान के डाइरेक्ट कस्टमर'।

मुंगीलाल का दर्द इतना बढ़ गया कि एक दिन उन्होंने फैसला कर लिया–अब भगवान से कोई शिकायत नहीं, कोई गुहार नहीं, कोई रिश्वत नहीं। अब जीवन का नया पाठ पढ़ा जाएगा–'भगवान को भूलो, नेता को पकड़ो।'

अगले दिन से मुंगीलाल में ग़ज़ब का बदलाव आया। पहले वो अकेले में बड़बड़ाते थे, अब लोगों के सामने भाषण देने लगे। बोले, 'अगर भगवान सुनते नहीं, तो हम भी अब राजनीति की डगर पकड़ेंगे।'

और क्या गजब की पकड़ थी! जो कभी दूसरों की थाली में झाँकते थे, अब खुद पार्टी की थाली के मालिक बन गए। दिन में चाय की दुकान पर बेतुकी बातें करते, रात को किसी छुटभैये नेता के पैर दबाते। एक नेता के पालतू बनते-बनते इतने आदर्श सेवक बन गए कि उन्हें खुद भी नहीं पता चला कि वो कब जनसेवक बन बैठे।

चुनाव आया, मुंगीलाल ने नामांकन भरा। चुनाव चिन्ह मिला - चप्पल। बोले, 'ये प्रतीक है संघर्ष काज और हम गरीबों की ज़िंदगी की असली पहचान।' जनता ने सोचा, 'कम से कम ये आदमी तो हमारे जैसा है' - और वोट दे डाला।

आज मुंगीलाल के पास सब कुछ है - बंगला ऐसा जैसे हवेली में भूत रहते हों, गाड़ी ऐसी कि बैल भी शर्म से पानी माँग ले, कपड़े ऐसे कि खुद दर्जी चकरा जाए। कभी जो खुद को भगवान का परित्यक्त समझते थे, अब भगवान को छोड़कर वोट बैंक की पूजा करने लगे हैं। गाँव के लोग पूछते, 'मुंगीलाल, अब तो सब कुछ है- भगवान को माफ कर दिया?' मुंगीलाल बोले, 'भगवान को तो मैंने तभी छोड़ दिया जब समझ आया कि वो सिर्फ अमीरों की सुनते हैं। अब मैं खुद ही भगवान बन गया हूँ–जनता की अर्ज़ियाँ सुनता हूँ, लेकिन हल वही जो मेरी जेब से मेल खाए।'

अब गाँव का हर तीसरा आदमी मुंगीलाल की राह पर चलना चाहता है। नतीजा यह है कि गाँव में अब किसान कम, और 'नेता इन ट्रेनिंग' ज्यादा हो गए हैं।

कभी मंदिर के बाहर भीख माँगने वाले मुंगीलाल, अब अपने दरबार में लोगों को इंतज़ार कराते हैं। और मजे की बात, अब वो भी रिश्वत लेते हैं - बोले, 'सीखा तो भगवान से ही है' जो ऊपर बैठकर भी सुनते नहीं, तो मैं नीचे रहकर क्यों सुनूँ?

शुक्रिया

देवेंद्रसिंह सिसौदिया

हे तमस
शुक्रिया
तू न आता तो
कैसे पहचान पाता
मैं इस दुनिया को
तू आया मेरे जीवन में
और
कर दिया रोशन मुझको।
तू न आता तो
कैसे पहचान पाता
मेरे आस्तीन में पले साँपों
को,
जो मौका मिलते ही
निकल पड़ते थें
डसने के लिए मुझको।
तू न आता तो
कैसे जान पाता
उस छोटे से दीपक
की महता को,
जो घोर अंधकार में भी
अकेला निडरता के साथ
करता रहा रोशन मुझको
तू न आता तो
घोर जंगल की रात में
जुगनुओं की चमक से
जीवन की तलाश
न हो पाती पूरी और
कैसे मिलती राह मुझको।
भोर होने को है
लालिमा छा चुकी है
अब समय हो चला
तुम्हारे जाने का
हे तमस....
पुनः शुक्रिया तुझको।

कला
पंकज तिवारी
कला समीक्षक

उमाशंकर की कृतियों में प्राणियों का जीवन संघर्ष

यात्रा इंसान के फितरत में है, जीवन भी तो एक यात्रा ही है। ऐसे ही तमाम यात्राओं में से एक कला यात्रा भी अपने आप में एक बहुत बड़ी यात्रा होती है, यात्रा साधु की भी होती है, घर-परिवार एवं संसार के हर एक प्राणी की अपनी-अपनी यात्रा होती है, हाँ मंजिल के बारे में किसी को नहीं पता होता। कर्म करो फल की इच्छा मत करो, फल खुद-ब-खुद अपना असर दिखाएगा। हमें आपको बस कार्य करना है और करना ही है इसी विचारधारा के साथ कलाक्षेत्र में प्रविष्ट हुए थे 1979 में बिहार में जन्में युवा कलाकार एवं क्यूरेटर उमाशंकर पाठक जबकि कलाक्षेत्र से जुड़ाव के मामले में उनके परिवार, नाते-रिश्तेदारों में दूर-दूर तक भी कोई नहीं था। उन्हें ड्राइंग करना अच्छा लगता था, बचपन से ही लगातार प्रैक्टिस में समय बीतता था, हमेशा नये-नये क्रियेशन्स में मन रमा रहता था कुछ विशेष की चाहत में आज भी माध्यमों का बदलना आपकी उपलब्धि रही है। गाँव जहाँ की दुनिया बहुत ही धीरे, कम सुविधाओं के साथ पर सुकून से चलती थी, में निरंतर घट रही घटनाओं पर पाठक जी बचपन से ही गहरी नज़र रखते थे, बहुत ही बारीकियों से उन सभी पर अध्ययन करते थे, इसी का असर रहा कि गाँव में उपले एवं कोयले पर बनते भोजन के समय उठने वाले धुंए में भी आपको कलाकृतियाँ नजर आयीं और वो तभी से आपके ज़ेहन में कहीं घुल-मिल सी गईं, जो शहर आने पर जहरीले धुंए में तब्दील होती नजर आईं और आपके कृति 'स्मोकिंग' जिसकी पूरी श्रृंखला है पर काम हो सका। 'एनिमल द स्मोक-II' में पूरा वातावरण ही धुंआ-धुंआ है जिसमें पशु, पक्षी, बिल्डिंग धुंए में डूबते हुए से प्रतीत हुए हैं, घुटन साफ नजर आ रही है। लोगों को जागरूक करती ऐसी कृतियाँ कलाकार की पहचान है। मजे की बात देखिए कि जो दृश्य आपके कृतियों में वर्षों पूर्व ही दृष्टिगोचर हो उठे थे वही दृश्य दिल्ली जैसे बड़े शहरों में अब हकीकत में बदलते दिखाई पड़ रहे हैं और हर वर्ष कुछ समय के लिए दिल्ली धूंए में डूब सी जाती है, रहना भारी हो जाता है, दम घुटने लगता है और लोगों को घरों में रहने हेतु एडवाइजरी जारी होने लगती है। ऐसे ही तमाम विषयों पर निरंतर कार्य कर रहे हैं युवा और परिपक्व कलाकार उमाशंकर पाठक। आपकी कलाकृति 'गांधी जी इन चम्पारण, काउ विद फार्मर, नीड ए कार्नर, माई विलेज आदि कृतियां स्मोकिंग आन ऐक्रेलिक शीट हैं। और बच्चों की तरह आपको पारिवारिक समस्याओं से ज्यादा नहीं जूझना पड़ा था, पिताजी को कला के बारे में पहले से ही कुछ हद तक जानकारी थी फलतः आर्ट क्लासेस तक पहुँच आसान हो गई और वहीं से कला के बारे में काफी सारी बातें समझने को मिली आपके कला यात्रा की शुरुआत भी यहीं से मानी जा सकती है जो घर से शुरू होकर गाँव, शहर से होते हुए कॉलेज आफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट पटना (2007), प्राचीन कला केंद्र चंडीगढ़ (2009), दिल्ली, धनबाद, कोलकाता, आइफेक्स, कैम्लिन, ललित कला अकादमी आदि से गुजरते हुए साउथ कोरिया तथा यू.के. तक पहुँच गयी। रिसाइकिल श्रृंखला पर बातचीत के दौरान आपने कहा था कि 'मैं प्रकृति के पुनरावृत्ति से प्रभावित हूँ, नेचर के ही ऑब्जेक्ट को लेकर रिसायकल या रेड्यूज करके मटेरियल बनाता हूँ और पेंटिंग, इंस्टॉलेशन जैसे प्रोजेक्ट तैयार करता हूँ।' आप आगे बताते हैं कि मैं रास्ते में कहीं जा रहा होता हूँ कोई भी ऑब्जेक्ट मुझे अच्छा दिखता है मैं उसे उठाकर रख लेता हूँ फिर उसे म्यूजियम की तरह प्रस्तुत करना चाहता हूँ, किसी बॉक्स में सजाकर आर्टफॉर्म के रूप में क्रिएट करना चाहता हूँ। झुग्गी झोपड़ियों में आप देखते होंगें ऊपर टायर, पॉलिथीन आदि रखा होता है जो बड़ा इंस्टालेशन होता है जबकि रखने वालों को नहीं पता होता कि यह कोई आर्ट है'। रिसाइकिल, स्मोक के साथ ही आपका एक प्रिय विषय रहा है पलायन, आपके चित्रों में सूखापन और बँटवारा इसी का परिचायक है जिसकी सार्थकता कोविड के दौरान और बढ़ गई थी जबकि आपके पलायन श्रृंखला की शुरुआत 2008 में ही हो गई थी। खुद को साबित करने हेतु लोगों को शहर जाना होता है, साबित करने हेतु ही क्यों बल्कि पेट संभालने हेतु, परिवार संभालने हेतु भी, जहाँ सारी सुविधाएं होती हैं, जहाँ विकास के लिए पूरा माहौल होता है, जहाँ सारे क्रिया-कलाप एकदम सिस्टमेटिक होते हैं लाल बत्ती, जेब्रा क्रॉसिंग जो लोगों को डील करते हैं, शहर में जिसकी भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है आपके कृतियों में इसको भी जगह हैं आप इससे भी प्रभावित खुद को मानते हैं।

आप पेंटिंग के साथ ही प्रदर्शनियाँ भी क्यूरेट करते हैं। तमाम तरह के प्रयोग करना आपके लिए आम है।

अपने कृतियों को अपने पुत्रों के रूप में देखने वाले कलाकार उमाशंकर पाठक खुद को स्पेनिस कलाकार साल्वाडोर डॉली से भी काफी हद तक प्रभावित मानते हैं पर उनके जैसे ही कलाकृति नहीं बल्कि अपने थीम को उनके व्यू से बनाना चाहते हैं।

'इकोज ऑफ नॉवेयर' शीर्षक से अभी-अभी आपके कृतियों की एकल प्रदर्शनी 'आरुषि आर्ट्स, ओखला नई दिल्ली के दीर्घा में शुरू हुई है जो 15 जुलाई तक चलेगी। यहाँ प्रदर्शित आपकी कृतियाँ बहुत ही प्रभावित करती हैं और कुछ-कुछ तो बेचैन भी। पलायन, वनों की कटाई जैसे विषयों पर बहुत ही गंभीरता के साथ काम करते हुए आप इतने बारीक-बारीक विंदुओं पर अपनी बात रंगों और रेखाओं के माध्यम से रखते हैं की इंसान सोचने पर मजबूर हो उठे पर दुख तो तब होता है जब उस मजबूरी के दौरान, भावुकता के भाव में बहने के दौरान, जो चीजें मन में आती हैं कि अब ऐसे कर्म भविष्य में नहीं करेंगे जिससे किसी का अनभल होता हो, जैसे भाव उस पल से बाहर आते ही भूल जाना होता है और कृतियों का असर दीर्घकालिक ना होकर क्षणिक रह जाता है पर कलाकार, साहित्यकार या समाज का हर वो वर्ग जिससे समाज कुछ भी चीजें हक के साथ पूँछ सकती है, उन्हें तो अपना काम पूरे ईमानदारी और निष्ठा के साथ तो करना ही होता है। कलाकार उमाशंकर भी निरंतर अपने हिस्से का कार्य किए जा रहे हैं। रंग सपाट, चटख पर तुरंत प्रभावित कर जाने वाला ही प्रयोग करते हैं। प्रयोग करते हैं या हो जाता है ये एक अलग प्रश्न है। माइग्रेशन श्रृंखला पर ही एक काम जो बहुत ही व्यथित करता है जिसमें चटख और रंग-बिरंगी दीवालें तो मनुष्य के सुख को, खुशी को, उनके सबकुछ प्राप्त कर लेने के प्यास, भूख को दर्शाती है पर वहीं पर पंख फड़फड़ाते पक्षियों का शोर, खुद के स्थान को बचाने हेतु जिराफ, हाथी, सहित और भी जानवरों के संघर्ष, तड़प आंखों में दुख का विशाल सागर, निराशा के अथाह गहरे खाई सा गम, उम्मीद में उठी कुछ और पलकें कुल मिलाकर बनारस के एक विशेष घाट की याद ताजा कर जाती है जहाँ एक तरफ खुशहाल जीवन के उम्मीद में नव दाम्पत्य जोड़ा पूजा-अर्चना को आता है तो वहीं बगल में किसी का परिवार किसी अपनों के जीवन के अंतिम संस्कार वाले कृयाकलापों में आंखों में आंसुओ के साथ व्यस्त होता है। चटख रंगों के बीच विशाल दुख की दुनिया है इनके कृतियों में। इन्हीं मुद्दों पर जानवरों की अपनी मीटिंग को भी बड़े ही बारीकियों के साथ दिखाया गया है इनके यहाँ। 'ल्यसिड स्टैटिक' शीर्षक में तो उनके संघर्षों को साफ-साफ देखा जा सकता है कि अगर आप हमारे सुख-चैन, खुशियों को छीनेंगे तो चैन से आप भी नहीं रह पायेंगे। मनुष्यों के बढ़ते लालसाओं का बढ़िया प्रतिशोध प्रस्तुत हुआ है इस कृति में।

इनकी कुछ पूर्व की कृतियों जैसे 'ड्रीम सिटी' में चटख एवं शांत रंगों का अच्छा संयोजन है जेब्रा सतरंगी पंख लिए एक दरवाजे पर बिल्कुल उहापोह की स्थिति में खड़ा है। नीले पंखों वाले पक्षी सपनों के उड़ान को दर्शाते हैं जबकि मुख्य दरवाजा बंद है। नवदुर्गा शीर्षक से बने चित्र में आधुनिकता का पुट साफ झलकता है। मृदु रंगों के साथ फूलों, पक्षियों, देवियों और नाव का अंकन कृति को जीवंत बना देती है। जेब्रा, मयूर, तितली तथा सपाट रंगों से सजे आपके कृतियों के आशियाने में कई ऐसे शीर्षक हैं जो मन को उद्वेलित करते हैं। 'मेरा गांव मेरा देश' कृति को दो भागों में बंटा दिखाया गया है निचले भाग में बिल्कुल ही भ्रमित अवस्था है अड़चनों का गढ़ हो जैसे, उदास जेब्रा हाथी भटके पथिक को प्रस्तुत करते हैं जबकि ऊपर बैठे सूत कातते गांधी जी निर्माण की प्रक्रिया को बयां करते हैं। खैर नये काम भी उसी रास्ते से होकर आये हुए हैं पर समय के साथ का परिवर्तन तो दिखता ही है। इस प्रदर्शनी के पूर्व काफी तैयारी है जो साफ दिखती है। इनके यहाँ कृतियों में किसी के लिए खुशी का वातावरण हैं तो किसी के लिए दुख भरी पूरी दुनिया और उससे जूझने की जद्दोजहद भी।

विचार
विवेक कुमार मिश्र
लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

कवि का होता है अपना ही संसार जिसे वह रचता और गढ़ता है

कविता एक कवि की दुनिया होती है, कवि का संसार, कवि की सृष्टि और कवि का संकल्प। यह भी कह सकते हैं कि कविता में कवि के स्वप्न और आकांक्षा को इस तरह से जगह मिलती है कि वह क्या सोचता है वह क्या करना चाहता है और जो दुनिया जो संसार उसे मिला है उस संसार को वह कैसे देखना चाहता है, यह सब एक कवि की कविता में दर्ज होता है। पाठक के लिए जरूरी होता है कि वह कवि के उस संकेत को भी पढ़ें जो उसकी आंखों में समाया है, उस स्वप्न का भी पाठ करें जो कवि की कविताओं में मौजूद है और यह सब जानने के लिए कवि की एक दो चार नहीं असंख्य कविताओं को, उसकी टिप्पणी को और उसके द्वारा जो कुछ लिखा गया है उसे बार बार देखते हुए समझने की कोशिश में उस रहस्य पर से पर्दा हटता है जो कविता में मौजूद होता है और जो उपर से देखने पर अलक्षित ही रह जाता है । सजग और सचेत पाठक ही कविता का सही अर्थ करते हैं और उस स्वप्न का पीछा करते हैं जो कवि के यहां देखा गया था। कवि को बार बार पढ़ना चाहिए तभी कवि के और कविता के अर्थ खुलते हैं । एक कवि सबसे पहले अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है यदि कवि के होने का, उसकी सत्ता का कोई अर्थ नहीं बनता तो फिर कवि को अपने कर्म कविता पर फिर से विचार करने की जरूरत है। हो सकता है कि कवि वह कविता लिख ही नहीं रहा हो जो कवि को अपने संसार से बाहर निकल कर वृहत्तर समाज से जोड़ने में मदद करती हों । यह भी हो सकता है कि कवि केवल उपस्थिति दर्ज कराने भर के लिए ही लिख रहा हों तो इससे कविता का और समाज का काम नहीं चलता। कविता और समाज की गति में जब तक कवि की उपस्थिति कवि की आंखों का तर्क जब समाज की धड़कनों को नहीं सुनेगा तब तक कवि का कविता का और कवि की उपस्थिति का कोई अर्थ नहीं बन पाता। कविता में कवि स्वयं की मुक्ति से कहीं ज्यादा अपनी दुनिया और अपने समाज की मुक्ति देखता है। कवि के यहां मुक्ति का अभिप्राय दार्शनिक अर्थ की मुक्ति से नहीं होता। एक कवि की मुक्ति अपने समाज को सामाजिक संदर्भों में वो सारी सुविधाएं प्रदान करना होता है जो एक नागरिक का लक्ष्य होता है। कवि हमारे नागरिक समाज का वह नागरिक है जो अपनी दुनिया को बदलने से पहले अन्य की दुनियाओं को बदलने के लिए संघर्ष करता है। कवि की इस चाह को - मुक्तिबोध के यहां बहुत साफ शब्दों में देखा जा सकता है -

समस्या एक मेरे सभ्य नगरों व व ग्रामों में
सभी मानव
सुखी सुंदर व शोषणमुक्त कब होंगे ?
- मुक्तिबोध

यह चिंता अकेले मुक्तिबोध की नहीं है यह समस्या प्रसाद के यहां है और हर सजग कवि की चिंता इस बोध के साथ ही होती है। उसकी आंखों में सभी जन के सुखी होने की कामना दर्ज होती है। यह स्वप्न अपने समय की यातना और पीड़ा से साक्षात्कार के बाद संभव होता है। कवि और कविता की जो प्राप्ति है वह गहरी साधना की बात है वह अपने को पूरी तरह से डूबा देने की ही छवि से साक्षात्कार हैं । असाध्य वीणा में अज्ञेय के यहां भी जो तथता है वह अपनी समूची सत्ता को डूबों देने का ही परिणाम है। असाध्य वीणा का साधक प्रियवंद केशकंबली जब वीणा को साधते हैं तो यहीं स्थिति है -

'श्रेय नहीं कुछ मेरा -
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में–
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने
सब कुछ को सौंप दिया था–
सुना आपने जो वह मेरा नहीं,
न वीणा का था -
वह तो सब कुछ की तथता थी
महाशून्य
वह महामौन
अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय
जो शब्दहीन
सब में गाता है।'

यह जो कवि की वाणी है वह अपने भीतर पूरे इतिहास को, सभ्यता और संस्कृति को एक साथ लेकर बैठी होती है कविता की व्याख्या किसी एक कोण से ही संभव नहीं होती है। हमें उन समस्त कोणों को उन बातों को देखना होता है जो कविता के संदर्भ में मौजूद होते हैं । कविता कवि के शब्द संसार से लेकर उस पाठक के शब्द संसार तक जाती है जिससे वह जीवन जीता है और जीने के लिए वे सूत्र हासिल करता है जो कवि के द्वारा प्रदत्त होते हैं । एक कवि की वाणी में उसके समय का दर्द ही बयान नहीं होता बल्कि उस दर्द से साक्षात्कार करते हुए उस दर्द से मुक्ति का रास्ता दिखाया जाता है । हर युग को समझने के लिए हमें कवि की उन आंखों को देखना होता है जिसमें युग संसार को अनुभव में ढालकर रचा गया है । अनुभव से सनी ये आंखें ही अपने समय का असली चेहरा होती हैं और समय का संवेदनशील इतिहास भी होती हैं । वह इतिहास जो किसी इतिहासकार के हाथों से नहीं लिखा जाता, जिसमें किसी की कोई रूचि नहीं होती, जिसे समाज का महत्वपूर्ण वर्ग ध्यान देने लायक भी नहीं मानता वह सब कवि की आंखों का केंद्रीय विषय होता है और इसे जानना पढ़ना आने वाले समय की विकास रेखा को जानने के लिए जरूरी हो जाता है । कवि की कविताएं शहर के प्लानर के लिए भी बहुत काम की होती हैं और उन सबके लिए महत्वपूर्ण होती हैं जिनकी रूचि स्वयं के समय के साथ साथ भविष्य के समय को गढ़ने में होती हैं । युग का मुहावरा रचने के लिए कोई और नहीं कवि ही आगे आता है । कवि द्वारा अपने समय के काव्य मुहावरे में जहां बात करनी होती है वहीं स्वयं हर कवि का अपना एक मुहावरा होता है उसका एक अलग ही रास्ता होता है । एक युग के यदि दस कवि हैं और वास्तव में वे कवि हैं तो उनका काव्य मुहावरा भी अलग अलग ही होगा । कोई भी कवि दूसरे कवि की प्रतिकृति नहीं होता न ही प्रतिकृति का कोई बड़ा प्रभाव कहीं दर्ज होता है। कुछ दिन के लिए किसी को भी कवि लेखक होने का कुछ भ्रम बना जाये , हो सकता है कि कुछ लोग अपने आप को महत्वपूर्ण ढ़ंग से घोषित भी करते चलें कि इस दौर के कवि तो वो हैं ही पिछला दौर भी उन्हीं के सहारे चल रहा था । यह कथन केवल कविता के संदर्भ में ही सत्य हो ऐसा नहीं है सभी विधाओं में ऐसी ही स्थितियां बनी रहती हैं । हर युग में वही कवि बोलता है या उसी कवि की वाणी को समय संसार सुनता है जो अपना अलग पथ और अलग मुहावरा बना कर चलता है । अपने कहने की नवीनता के कारण सबसे पहले वह कवि अपनी ओर आकर्षित करता है । फिर उस कवि का मुहावरा अपनी भाषा में, अपनी परंपरा में कहां से शुरु होता है और कहां से वह एकदम से नया हो जाता है यह देखना जरूरी होता है। बड़ा कवि अपनी यात्रा अपने तर्कों से करता है । उसे किसी और का काव्य तर्क उतना मदद नहीं करता जितना कि स्वयं उसका तर्क । कवि का अपना ही संसार होता है जिसे वह अपनी कविताओं से रचता है। कविता के संसार में जो कवि है और जो दुनिया उसके शब्दों से रची जाती है उसे समझने की और बरतने की ईमानदारी कवि संसार के साथ उस पाठक की भी होती है जो कविता को पढ़ता है ।

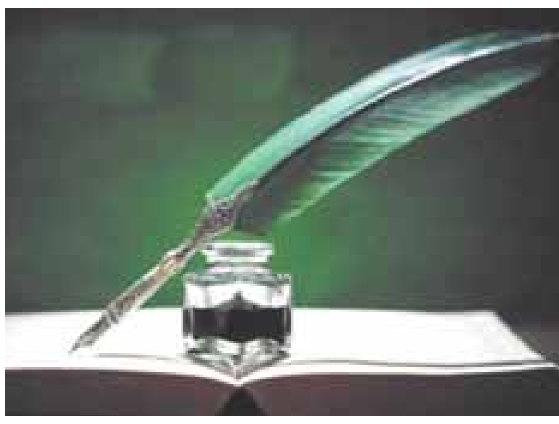

एक कवि को चाहिए कि वह कविता में अपने समय का समाजशास्त्र लिखे अपने समय की सामाजिकी का अध्ययन करता चलें और बराबर से उस ओर इशारा करते चलें जिधर समाज जा रहा है । समाज की स्वाभाविक गति को पहचाने और समाज की क्या आवश्यकता है ? समाज क्या चाहता है ? इस दिशा में कविता को कार्य करना चाहिए। किन कवियों की कविताएं अपने समय और समाज का भाष्य कर रही हैं अपने समाज के यथार्थ का बयान किन कवियों के यहां हो रहा है । इसे पढ़ना जरूरी होता है । कवि यदि केवल मुठ्ठी भांज भांज कर बस लिख रहा है तो उसका संवेदना के विकास और इतिहास से कोई लेना-देना नहीं होता। वह चलते चलते बस कुछ शब्दों का जोड़ तोड़ भर कर रहा है जिसे कविता की परिभाषा में या कविता के इतिहास में दर्ज नहीं किया जा सकता । कविता न तो किसी कवि की प्रतिकृति होती है न ही किसी अन्य कवि की छाया कविता होती है । एक सीमा तक छाया कविताएं अपना प्रभाव छोड़ती हैं पर छाया तो छाया ही है और उससे मूल कविता का आनंद और संघर्ष कहां लिखा जा सकता है । एक सच्चे कवि का अपने समय में हस्तक्षेप तभी होता है जब वह सामाजिक सच्चाई को कविता के तंत्र में गढ़ता है । कविता में युग की पीड़ा और युग के शब्द इस तरह से आ जाते हैं कि इसमें वह अपने जमाने के सच को भी देख लेता है और भविष्य के सच का भी साक्षात्कार कराता चलता है । यहीं से एक कवि की वास्तविक पहचान शुरू होती है।

दक्षिण भारतीय नेचुरल स्टार निशी के अभिनय से सजी 'हिट'

फिल्म समीक्षा
आदित्य दुबे
(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक हैं)

हाई-ऑक्टेन एक्शन सीक्वेंस इन दिनों एक्शन फिल्मों के विशेषण को दर्शाने वाला एक खास जुमला है जिसका मतलब होता है ऐसे एक्शन दृश्य जो बहुत तेज़ गति से नाटकीय और रोमांचक तरीके से आपके सामने लायें जायें । ऐसे दृश्य आम तौर पर बहुत सारे रोमांचक तत्वों जैसे - लड़ाई, गोलीबारी, पीछा करने और सतत विस्फोट आदि के रूप में परदे पर आते हैं । ऐसे ही हाई-ऑक्टेन एक्शन सीक्वेंस में भरी एक फिल्म रिलीज हुई है -

हिट- द थर्ड केस ।

सच तो यह है कि है फिल्म की कहानी ऐसी है, जो आपको झकझोरकर रख देगी। इसमें डार्क वेबसाइट के बारे में दिखाया गया है, जो क्राइम की एक नई दुनिया को जन्म देता है। इसमें जम्मू-कश्मीर की कहानी है, जिसमें लोग झूठी आजादी के नाम पर नौ महीने की मासूम तक का बेरहमी से कत्ल करने तक के लिए तैयार रहते हैं। इसकी कहानी खूनी खेल की कहानी है जिसे मिटाने का काम एक मूडी और साइको पुलिस अफसर एसपी अर्जुन सरकार करता है।

फिल्म की कहानी को आप उत्कृष्ट तो नहीं कह सकते हैं लेकिन हाँ अपनी प्रस्तुति की वजह से यह काफी बढ़िया साबित हो रही है। केवल प्रस्तुति ही नहीं, प्रस्तुति के साथ ही कहानी आपको विश्वसनीय भी लगती है ।फिल्म पहले फ्रेम से ही आपको बाँध लेती है। शुरुआत में आपको फिल्म में पुलिस अधीक्षक, अर्जुन सरकार की केन्द्रीय भूमिका निभाने वाले दक्षिण भारतीय ख्यात अभिनेता नानी जेल में दिखाई देते हैं लेकिन फिर अन्त में जो होता है वो कमाल होता है। फिल्म के कुछ दृश्य़ तो अत्यन्त खूबी के साथ फिल्माते गये हें ।

इस फिल्म में अभिनय की यदि बात की जाए तो नानी को यूँ ही नेचुरल स्टार नहीं कहा जाता है। उनके अभिनय में नेचुरैलिटी को देखा भी जा सकता है। वो अपने भूमिका में भावनात्मक और? आक्रामकता को समान अधिकार के साथ व्यक्त करते हैं । उनका रुमानी अंदाज भी कमाल का होता है। ऐसे में जब ये सब कुछ एक ही फिल्म और एक ही भूमिका में देखने के लिए मिल जाए तो यह प्रशंसकों के लिये एक उपलब्धि से कम नहीं है । उनकी संवाद अदायगी, भाषा की समझ, चेहरे के द्वारा भाव प्रदर्शन दृष्य़ दर दृष्य लुभाता है।

फिल्म में नानी और श्रीनिधि के साथ ही प्रतीक बब्बर भी हैं। प्रतीक को मुख्यतः आपने कई फिल्मों में विलेन की भूमिका में देखा होगा और उनके काम को पसंद भी किया होगा। लेकिन, इस बार तो उन्होंने बतौर विलेन की सारी हदें ही पार कर दी। उन्होंने ऐसे विलेन की भूमिका निभाई है, जो 9 महीने के बच्चे को भी नहीं छोड़ता है। कहते हैं ना कि एक फिल्म में अगर दमदार विलेन ना हो और हीरो को बराबर से टक्कर ना दे तो मजा ही नहीं आता है तो उस कमी को पूरा प्रतीक बब्बर ने किया है। वहीं, अन्य कलाकारों ने भी शानदार काम किया है।

अंत में अगर फिल्म को देखने और ना देखने के बात की जाए तो आप इसे देख सकते हैं लेकिन, अगर आप कमजोर दिल वाले हैं और ज्यादा खून खराबा नहीं देख सकते हैं तो ये फिल्म आप बिल्कुल भी देखने ना जाएं। वहीं, अगर आप एक्शन और सस्पेंस क्राइम थ्रिलर फिल्मों के प्रेमी हैं तो आपके लिए नानी स्टारर ये फिल्म किसी ट्रीट से कम नहीं है।

संक्षिप्त समाचार

स्मार्ट मीटर खपत के आधार पर दिन के टैरिफ में 20 प्रतिशत की मिलेगी छूट

सीहोर(निप्र)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने बताया है कि स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं को दिन के टैरिफ में छूट प्रदान की जाएगी। स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं के लिए यह सभी छूट अथवा प्रोत्साहन की गणना सरकारी सब्सिडी (यदि कोई हो) को छोड़कर की जाएगी। कंपनी ने कहा है कि यह छूट एलवी उपभोक्ता श्रेणियों के लिए विशिष्ट नियमों और शर्तों के आधार पर दिन के विभिन्न समय के दौरान खपत की अवधि के अनुसार ऊर्जा शुल्क पर लागू होगी। एल.वी.-1 घरेलू और एल.वी.-3 सार्वजनिक जल कार्य और स्ट्रीट लाइट पीक ऑवर्स (सुबह) 9 बजे से शाम 5 बजे तक की अवधि के दौरान उपभोग की गई ऊर्जा के लिए ऊर्जा प्रभार की सामान्य दर पर 20 प्रतिशत की छूट प्रदान की जाएगी। इसी तरह एल.वी.-2=गैर-घरेलू और एल.वी.-4=एल.टी. औद्योगिक ऑफ पीक/ सौर समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक की अवधि के दौरान उपभोग की गई ऊर्जा के लिए ऊर्जा प्रभार की सामान्य दर पर 20 प्रतिशत की छूट प्रदान की जाएगी। उपरोक्त दोनों ही श्रेणियों में यह छूट 10 किलोवाट से अधिक स्वीकृत लोड / अनुबंध मांग वाले उपभोक्ताओं को ही मिलेगी। वहीं स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं के लिए जिसमें एल.वी.- 1 घरेलू, एल.वी.-2 गैर घरेलू, एल.वी.-3 सार्वजनिक जल कार्य और स्ट्रीट लाइट और एलवी-4 एलटी औद्योगिक उपभोक्ताओं के लिए ऑफ पीक/ सौर समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक की अवधि के दौरान उपभोग की गई ऊर्जा के लिए ऊर्जा प्रभार की सामान्य दर पर 20 प्रतिशत की छूट प्रदान की जाएगी। यह छूट 10 किलोवाट तक स्वीकृत लोड / अनुबंध मांग वाले उपभोक्ताओं को ही मिलेगी।

विकसित कृषि संकल्प अभियान कार्यक्रम में किसानों को एकीकृत खेती अपनाने की दी सलाह

बैतूल(निप्र)। कलेक्टर श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देशानुसार जिले में विकसित कृषि संकल्प अभियान कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। विकसित कृषि संकल्प अभियान में 5 जून को प्रथम दल द्वारा बैतूल विकासखण्ड के मलकापुर, आरूल, भैंसदेही पंचायत, द्वितीय दल द्वारा मुलताई विकासखण्ड के चिखलीकला, घाट पिपरिया, दुनावा पंचायत, तृतीय दल द्वारा शाहपुर विकासखण्ड के काजली, टांगनामाल ढोडरामाल पंचायत, चतुर्थ दल द्वारा आमला विकासखण्ड के बोरीखुर्द, बारंगवाड़ी, मालेगांव पंचायत एवं पंचम दल द्वारा विकासखण्ड भीमपुर, के आदर्श पिपरिया, भीमपुर, कुण्डबकाजन पंचायत में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें कुल 2173 किसान उपस्थित रहें। इस दौरान कृषि विज्ञान केन्द्र एवं कृषि अधिकारियों द्वारा किसानों को एकीकृत खेती अपनाने की सलाह दी गई। कार्यक्रम में कृषि वैज्ञानिकों एवं कृषि अधिकारियों ने बताया कि एकीकृत खेती एक ऐसी कृषि प्रणाली है, जिसमें फसल उत्पादन, मत्स्य पालन, पशुपालन मुर्गी पालन एवं अन्य कृषि गतिविधियों को एक साथ जोड़ा जाता है। किसानों को खरीफ मौसम में उगाई जाने वाली प्रमुख फसलों से संबंधित आधुनिक नवीन तकनीकों एवं किस्मों की जानकारी सरकारी योजनाओं की जानकारी, फसलों में डाले जाने वाले उर्वरक की जानकारी, कीटनाशक का कम उपयोग करने एव नरवाई न जलाने हेतु जानकारी दी गयी। साथ ही इस प्रणाली में जैविक खाद एवं गोबर खाद के उपयोग से एवं फसलों के अवशेष पशुओं के चारे के रूप में उपयोग कर लागत को कम कर, आर्थिक स्थित को मजबूत करती है। मिट्टी की उर्वरता बढ़ाती है किसान कल्याण तथा कृषि विभाग के उपसंचालक ने बताया कि विकसित कृषि संकल्प अभियान के अन्तर्गत आज 6 जून को बैतूल विकासखण्ड के दनोरा, खेड़ी सावलीगढ़, महदगांव पंचायत, द्वितीय दल द्वारा मुलताई विकासखण्ड के खेड़ीकोर्ट, निमनवाड़ा, ऐनखेड़ा पंचायत, तृतीय दल द्वारा शाहपुर विकासखण्ड के भौंरा, धपाड़ामाल, गुवाड़ी पंचायत चतुर्थ दल द्वारा आमला विकासखण्ड के बोड़खी, नरेरा, खण्ड पिपरिया पंचायत एवं पंचम दल द्वारा विकासखण्ड भीमपुर, के खामापुर, चकढाना, बेला पंचायत में कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने सभी किसानों से कार्यक्रम उपस्थित होने का अनुरोध किया है।

'एक शाम हनुमान जी के नाम' देश के तीन प्रमुख मंडल एक मंच पर

3 घंटे में संगीतमय सुंदरकांड पाठ में 60 दोहे और चौपाई पर देंगे प्रस्तुति...

आपरेशन सिंदूर अभियान की सफलता पर धार जिला पत्रकार संघ का अनूठा आयोजन 14 जून को

धार। आपरेशन सिंदूर अभियान की अपार सफलता ओर भारतीय सेना के अदम्य शौर्य साहस को नमन करते हुए धार मुख्यालय पर 'एक शाम हनुमान जी के नाम' अखिल भारतीय सुंदरकांड पाठ का अनूठा आयोजन धार जिला पत्रकार संघ द्वारा किया जा रहा हे।

आयोजन में देश के तीन प्रसिद्ध सुंदरकांड मंडल एक मंच पर क्रम अनुसार 20-20 दोहे और चौपाइयों पर प्रस्तुति देगे। धार की धरा पर पहली बार गुजरात के बड़ौदा शहर की प्रसिद्ध मातृ शक्ति मंडल भक्तिभाव से परिपूर्ण प्रस्तुति देगा, प्रदेश का सबसे ख्यात पवनपुत्र सुंदरकांड मंडल अमझेरा ओर विख्यात राजसमंद सुंदर कांड मंडल भी अपनी सुरम्य वाणी से मंत्रमुग्ध करेंगे। धार जिला पत्रकार संघ के जिलाध्यक्ष पंडित छोटू शास्त्री ने बताया कि 'एक शाम श्री हनुमान जी के नाम' संगीतमय भव्य सुंदरकांड पाठ का यह पुनित आयोजन आपरेशन सिंदूर अभियान की सफलता एवं भारतीय सेना के अदम्य शौर्य एवं साहस को नमन करते हुए राष्ट्र प्रहरियों को समर्पित है। आयोजन विशिष्ट एवं गरिमामय इसलिए भी है की धार की धरा पर पहली बार बडौदा की मातृ शक्तियो द्वारा भव्य सुंदरकांड की प्रस्तुति दी जावेगी। उक्त भव्य आयोजन धार के जे.एम.डी पैलेस मे 14 जून शनिवार को शाम 7 बजे से आयोजित होगा। संगीतमय भव्य सुंदरकांड मे राजस्थान के राजसमद की माँ वक्रांगी मित्र मंडल म.प्र. की एतिहासिक प्राचीन राणा बख्तावर की नगरी अमझेरा का पवनपुत्र सुंदरकांड मंडल व गुजरात के प्रसिद्ध शहर बडौदा की चार भुजा रामायण महिला मंडल द्वारा संगीतमय भव्य सुंदरकांड की प्रस्तुतियां दी जावेगी। 3 घंटे की इस भव्य दिव्य और भक्तिमय आयोजन मे प्रत्येक टीम को 1-1 घंटे की अवधि निर्धारित की गई है जिसमे प्रत्येक मंडल को 20-20 दोहे की प्रस्तुतिया प्रस्तुत करेगी। आयोजन को लेकर व्यापक तैयारी शुरू हो गई है। कार्यक्रम की लाइव लिंक की भी व्यवस्था की जा रही है सोशल मीडिया के माध्यम से भक्तजनों को निमंत्रण भेजा जा रहा हे।

पहली बार महिलाओं (मातृ शक्ति) द्वारा दी जाएगी प्रस्तुति

एक शाम श्री हनुमान जी के नाम के इस भव्य भक्तिमय आयोजन की खास बात यह है कि धार की पावनधरा पर पहली बार गुजरात के प्रसिद्ध बडौदा के चार भुजा रामायण महिला मंडल द्वारा प्रस्तुति दी जा रही है। संभवतः धार शहर मे पहली बार भक्तिभाव से परिपूर्ण इस सुंदरकांड में महिलाओ के मंडल द्वारा प्रस्तुति दिया जाना गौरव का विषय है। इस अवसर पर पं. छोटू शास्त्री ने 'हनुमान भक्तो से इस भव्य-दिव्य भक्तिमय सुंदरकांड में भाग लेने का आग्रह किया है साथ ही बताया कि आयोजन स्थल पर माता ओर बहनों के लिए बैठने की समुचित व्यवस्था की गई है। ।

नरेंद्र मोदी विचार मंच में पदाधिकारियों की नियुक्तियां

धार। नरेंद्र मोदी विचार मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष रवि चाणक्य , प्रदेश अध्यक्ष सुनील कुमार सांखला ,महिला शाखा की राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ ज्योति श्रीवास्तव,प्रदेश अध्यक्ष मंजू श्याम सिंह राठौड़ एवं मंच की मुख्य शाखा मंत्री हिम्मत परिहार द्वारा संगठन मे समर्पित कर्मठ व्यक्तियों को उनके योगदान और निष्ठा को देखते हुए संगठन ने महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। नरेंद्र मोदी विचार मंच मुख्य शाखा के प्रदेश महासचिव सोलंकीने बताया कि महेशचंद्र माहेश्वरी को मंच की मुख्य शाखा में प्रदेश प्रभारी राजाभाऊ भदाने मुख्य शाखा मे प्रदेश उपाध्यक्षएवं महिला शाखा में भाजपा की पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष दीदी ममता जोशी को धार जिला महिला अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। नियुक्ति पर धार मंच के जिला अध्यक्ष मुकेश निगम,जिला महामंत्री प्रवीण टाक,आईटी सेल जिला अध्यक्ष शुभम उपाध्याय,जिला सह मीडिया प्रभारी पारस जैन गंगवाल, जिला उपाध्यक्ष नमन रावल, विधान सभा प्रभारी ताजु वसुनिया,युवा मोर्चा जिला प्रभारी देवांग पवार,नगर अध्यक्ष शैलेश बिजवा,विजय राठौड़,गणेश राठौड़, शांतिलाल शर्मा, युवा मोर्चा के अध्यक्ष मुरलीधर वैष्णव,वार्ड अध्यक्ष लक्ष्मीकांत बुंदेला,नगर मंत्री संदीप प्रजापति,त्रिलोक चौहान एवं मंच के समस्त पदाधिकारी कार्यकर्ता द्वारा शुभकामनाएं और बधाई दी । जानकारी नरेन्द्र मोदी विचार मंच के जिला मीडिया प्रभारी हरिश आर्य, पारस जैन गंगवाल ने दी।

मुख्यमंत्री एवं केंद्रीय कृषि मंत्री 07 जून को सीहोर में करेंगे लगभग 113 करोड़ रूपये से अधिक के विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन

सीहोर (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव एवं केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान 07 जून को सीहोर में आयोजित कार्यक्रम में 113 करोड़ 45 लाख 59 हजार रूपये के विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन करेंगे। इसके साथ ही वे विभिन्न योजनाओं के अनेक हितग्राहियों को योजनाओं के स्वीकृति पत्र प्रदान कर लाभान्वित भी करेंगे।

इन कार्यों का करेंगे भूमिपूजन : मुख्यमंत्री डॉ यादव एवं केंद्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान सीहोर में आयोजित कार्यक्रम में 2101.00 लाख रूपये लागत के सीहोर में बनने वाले अमृत 2.0 के तहत सीवरेज प्रोजेक्ट, 350.00 लाख रूपये लागत के मल्टीपरपज स्विमिंग पूल एवं जिम निर्माण कार्य, 440.00 लाख रूपये लागत के भोपाल नाके से कोतवाली चौराहे तक सीसी कार्य, उत्कृष्ट विद्यालय से लुनिया चौराहे तक सीसी कार्य एवं स्ट्रीट लाइट एवं डिवाइडर के कार्य, 441.43 लाख रूपये लागत के रेशम केन्द्र के पास स्टेडियम निर्माण कार्य, 710.00 लाख रूपये लागत के कोतवाली चौराहे से तहसील चौराहे तक तथा मछली पूल से शुगर फैक्टरी चौराहे तक बीटी सड़क निर्माण कार्य, मछली पूल से लुनिया चौराहे तक तथा हॉस्पिटल चौराहे से अटल चौक तक सीसी सड़क निर्माण कार्य का भूमिपूजन करेंगे। इसी प्रकार वे 783.68 लाख रूपये लागत के इंग्लिशपुरा कोतवाली चौराहे पुल से होते हुए मेन रोड तक नाला निर्माण कार्य, प्रभात एग्रो के पीछे से इंडस्ट्रियल एरिया तक नाला निर्माण कार्य, इंग्लिशपुरा पुल से दूल्हा बादशाह पुल तक नाले के डोनो तरफ रिटेनिंग वाल निर्माण कार्य तथा दूल्हा बादशाह पुल के पास स्टॉप डैम निर्माण कार्य का भूमिपूजन करेंगे। इसी प्रकार वे इछावर में 491.47 लाख रूपये लागत के स्वच्छ भारत मिशन 2.0 अंतर्गत उपयोगिता जलप्रबंधन कार्य, 3112.50 लाख रूपये लागत के जिले के 83 नवीन पंचायत भवनों के निर्माण कार्य, 24.75 लाख रूपये लागत के इछावर में 01 अमृत सरोवर निर्माण कार्य, 20 लाख रूपये लागत के ग्राम बैरागढ़ खुमान में 01 मंगल भवन निर्माण कार्य, 34.85 लाख रूपये लागत के सीहोर ब्लॉक अंतर्गत 02 पंचायत भवन निर्माण कार्य, 623.3 लाख रूपये लागत के 25 पंचायतों में सामुदायिक भवन निमार्ण कार्य, 65.84 लाख रूपये लागत के ग्राम चाँदबड़ जागीर में बनने वाले हाट बाजार एवं सांस्कृतिक मंच निर्माण कार्य तथा 71.16 लाख रूपये लाख रूपये लागत के उप स्वास्थ्य केन्द्र के नवीन भवन निर्माण कार्य का भूमिपूजन करेंगे। इसी प्रकार वे 18.25 लाख रूपये लागत के ग्राम बिजोरा में बनने वाले शासकीय माध्यमिक शाला भवन निर्माण कार्य, 18.25 लाख रूपये लागत के ग्राम नोनीखेड़ी गोसाई में न्यू माध्यमिक शाला भवन निर्माण कार्य, 43.26 लाख रूपये लागत के ग्राम सिराड़ी में बनने वाले प्राथमिक शाला भवन के निर्माण कार्य, 51 लाख रूपये लागत के ग्राम जमोनिया टैंक में बनने वाले माध्यमिक शाला भवन निर्माण कार्य तथा 51-51 लाख रूपये की लागत से ग्राम डोडी एवं पाटन में बनने वाले माध्यमिक शाला भवनों के निर्माण कार्य का भूमिपूजन करेंगे।

काउंसिल अथवा भारतीय प्रेस-परिषद के नाम का उपयोग करना अवैधानिक

विदिशा (निप्र)। केन्द्र सरकार ने प्रेस-काउंसिल ऑफ इंडिया (भारतीय प्रेस परिषद) के नाम के अनाधिकृत उपयोग पर रोक लगाने के लिए एडवाइजरी जारी की है। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा एडवाइजरी में कहा गया है कि उन्हें सूचना मिली है, कुछ प्रेस संगठनों द्वारा श्प्रेस-परिषदश् शब्द का अनुचित उपयोग किया जा रहा है, जिससे प्रेस-काउंसिल ऑफ इंडिया की संस्थागत महत्ता प्रभावित हो रही है और उसके विशिष्ट अधिकारों का उल्लंघन हो रहा है।

इसी को ध्यान में रखते हुए यह एडवाइजरी जारी की गई है। सचिव सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा जारी निर्देशों में कहा गया है कि प्रेस-काउंसिल ऑफ इंडिया एक सांविधिक निकाय है। इसकी स्थापना प्रेस-परिषद अधिनियम-1978 के तहत प्रेस की स्वतंत्रता को सुरक्षित रखने और समाचार-पत्रों एवं समाचार एजेंसियों के मानकों को बनाए रखने एवं सुधारने के उद्देश्य से की गई थी। इसका सचिवालय नई दिल्ली के लोधी रोड स्थित सीजीओ कॉम्प्लेक्स के सूचना भवन में है। सचिवालय द्वारा यह स्पष्ट किया गया है कि भारतीय प्रेस-परिषद की किसी भी राज्य में कोई शाखा नहीं है, न ही उसने किसी अन्य निकाय को अपने समान या मिलते-जुलते नाम का उपयोग करने के लिए अधिकृत किया है। सचिवालय से जारी निर्देश के अनुसार किसी संगठन द्वारा प्रेस काउंसिल अथवा भारतीय प्रेस-परिषद शब्द का उपयोग करना, प्रतीक और नाम के अनुचित उपयोग निवारण अधिनियम, 1950 की धारा 3 और प्रविष्टि 7 का उल्लंघन है। इस संदर्भ में केन्द्रीय विधि विभाग ने भी स्पष्ट किया है कि किसी अन्य संगठन द्वारा इस नाम का उपयोग करना अवैध है और इसके लिए कानूनी कार्रवाई की जा सकती है। सचिवालय ने श्प्रेस-काउंसिलश् अथवा भारतीय प्रेस परिषद शब्द का उपयोग न करने के संबंध में सभी जिला कलेक्टर्स को भी निर्देशित किया गया है।

कांग्रेस के पूर्व सरदारपुर नगर पंचायत अध्यक्ष महेश भाबर भाजपा में शामिल हुए

धार। कांग्रेस के पूर्व सरदारपुर नगर पंचायत अध्यक्ष महेश भाबर भाजपा की रीति नीति से प्रभावित होकर शुक्रवार को भाजपा जिला कार्यालय पहुंचकर केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर भाजपा जिला अध्यक्ष निलेश भारती के नेतृत्व में भाजपा में शामिल हुए।

इस दौरान पूर्व मंत्री राजवर्धन सिंह दत्तीगांव विधायक नीना वर्मा पूर्व विधायक वेलसिंह भूरिया जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार सिंह मेड़ा मनोज सोमानी उपस्थित थे।

महेश भाबर 2012 से 2017 तक नगर परिषद में कांग्रेस पार्षद रहे व 2018 से 2023 तक नगर परिषद में अध्यक्ष के पद पर रहे। सदस्यता ग्रहण के अवसर पर सरदारपुर मंडल अध्यक्ष ओंकार लाल जाट, जिला मंत्री जमुना भूरिया,भाजपा के समस्त वरिष्ठ नेता भी मौजूद रहे। जानकारी भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने दी।

बाल भिक्षा वृत्ति, बाल श्रम और नशे में लिप्त बच्चों के लिए जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

विदिशा (निप्र)। महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा विदिशा के जतरापुरा मे बाल भिक्षावृत्ती, बाल श्रम, नशे मे लिप्त एवं सडक पर कचरा पन्नी बीनने बाले बच्चों हेतु जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुपालन में बाल भिक्षावृत्ति रोकने, बच्चों द्वारा नशा नहीं करने व बाल श्रम नहीं करने के लिए यह जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया था। कार्यक्रम की रूप रेखा श्रीमती आकांक्षा मरावी द्वारा रखी गई। जिसमें उनके द्वारा बताया गया कि बच्चों से कचरा पन्नी, भिक्षा वृत्ती, नशा एवं बाल श्रम नहीं कराया जाना है क्योंकि यह बच्चों को उनकी शिक्षा पूर्ण करने से रोकता है हम सभी को इन बच्चों को भिक्षा नहीं शिक्षा से जोड़ना है यहां पर रहने वाले अधिकतर परिवार कबाड़ का कार्य करते हैं और अपने साथ बच्चों को भी उसमें जोड़ लेते हैं। हम सभी को उन बच्चों को शिक्षा से जोड़ने का कार्य करना है। श्री अनिमेष तिवारी द्वारा विधिक सहायता एवं पॉक्सो एक्ट के विषय मे बताया गया। श्रीमती देवनानंदनी बघेल द्वारा बाल श्रम रोकने एवं विभागीय योजनाओं से जोड़ने के विषय मे बताया। बाल कल्याण समिति सदस्य श्री चंद्रभान सिंह राजपूत द्वारा बाल कल्याण समिति के माध्यम से बच्चों को दी जाने वाली सहयताओं के विषय मे बतलाया गया कि जिन बच्चों के माता पिता नही हैं उनको बाल गृह बालिका गृह मे रख कर उनकी शिक्षा एवं संरक्षण का कार्य किया जाता है और उनके परिवार को ढूंढते हुये परिवार मे पुनर्नवास कराया जाता है। सभी बिभागों के प्रतिनिधियों द्वारा बच्चों को बिभागीय योजनाओं से जोड़ने हेतु जानकारी दी गई। बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष श्री रामबाबू प्रजापति , सदस्य गण श्री दीवान सिंह मीणा, श्रीमती लक्ष्मी शर्मा, श्रीमती सुनीता दांगी श्री राजकुमार सर्राफ, परियोजना अधिकारी श्री संजय सिंह, श्री संतोष रघुवंशी शिक्षा विभाग से श्री बलभद्र सिंह मीणा, उप निरीक्षक श्री रणधीर सिंह, श्रम निरीक्षक श्री विवेक पचैरी, अशासकीय संस्थाओ के प्रतिनिधि सफल शिक्षा सेवा समिति से श्री मनोज कौशल, एक्ससिस टू जस्टिस से दीपा शर्मा एवं अन्य प्रतिभागी उपस्थित हुये।

हम होंगे कामयाब तहत शिक्षकों के अध्यापन कार्यो के उन्नयन पर कार्यशाला

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के द्वारा जिले में किए जा रहे नवाचार के तहत अधिक से अधिक विद्यार्थी राष्ट्रीय स्तर की इंजीनियरिंग व मेडिकल कॉलेजो में दाखिला हेतु आयोजित होने वाली परीक्षाओं में सफल हो इसके लिए सबसे पहले उनके द्वारा शिक्षकों को अध्यापन कार्य कैसे करें से अवगत कराने हेतु एक विशेष कार्यशाला का आयोजन शुक्रवार को रविन्द्रनाथ टैगोर सांस्कृतिक भवन (ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया था। जिला प्रशासन एवं स्कूल शिक्षा विभाग के संयुक्त समन्वय से आयोजित कार्यशाला में इन्दौर की एलिन के द्वारा परीक्षार्थियों की तैयारी हेतु प्लानिंग, मार्गदर्शन पर विस्तृत जानकारी शिक्षकों के मध्य सांझा की है। कलेक्टर श्री गुप्ता ने कार्यशाला का शुभारंभ मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्जवलित व माल्यार्पण कर किया। उन्होंने कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए शिक्षकों से कहा कि स्कूली विद्यार्थियों के विकास मार्ग बंद ना हो। हर बच्चे में कुछ न कुछ क्षमता होती है उसे हम विकसित कर उस क्षेत्र में हम उसे अग्रणी बनाएं। उन्होंने बच्चो के लिए प्राप्त होने वाले अवसरों खासकर राष्ट्रीय स्तर की ऐसी परीक्षाएं जिनके माध्यम से उत्कृष्ट मेडिकल व इंजीनियरिंग की पढाई करने में दाखिला लेने से पहले जिले के सभी शासकीय स्कूलो में अध्ययनरत बच्चो को इन संस्थाओं की जानकारी हो और वे पढाई के माध्यम से वहां तक पहुंचे।

स्कूलो में इतनी जानकारी दी जाए कि टयूशन की उन्हें जरूरत ना पड़े। कलेक्टर श्री गुप्ता ने कहा कि ज्ञान की पूजा करने का मतलब हमारे अन्दर सीखने की भूख बनी रहें इसके लिए ट्रेनिंग, अध्ययन सामग्री, विभिन्न माध्यमों से उपलब्ध कराई जा सकती है। शिक्षकों का दायित्व है कि यहां जो जानकारी दी जा रही है वह विद्यार्थियों में प्रयोग करे और बच्चों में रटने की जगह समझने और आत्मसात करने की प्रवृत्ति में वृद्धि हो। ऐसे बच्चे जो प्रश्नो को हल नहीं कर पाते है। उनकी कमजोरी को संज्ञान में लेते हुए हम मित्रवर बनकर उनकी मदद करे। बच्चों में जिज्ञासाओं को जानने की ज्यादा लालसा रहती है अतः उनके द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नो का हम ऐसा सटीक जबाब दे कि बच्चे सुगमता से समझ सकें। अपनी मेमोरी पावर को कैसे बढाएं ताकि जो पढे वह याद बना रहें। इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए।

उन्होंने कहा कि शिक्षकों की जिज्ञासाओं का समाधान वीडियो कांफ्रेसिंग के माध्यम से व्यवस्था क्रियान्वित की जाएगी। कलेक्टर श्री गुप्ता ने कहा कि इस कार्यशाला का प्रमुख उद्धेश्य यहीं है कि शासकीय स्कूलो में पढ़ने वाले बच्चे अपने आप को किसी भी स्तर पर कमजोर ना समझे। शासन प्रशासन उनकी शैक्षणिक जिज्ञासाओं के समाधान हेतु कृत संकल्पित है। कार्यशाला में इन्दौर की एलिन के विशेषज्ञो द्वारा शिक्षकों को मार्गदर्शन स्वरूप छोटे-छोटे संस्मरणो के माध्यम से रेखांकित किया गया है। उक्त कार्यशाला में संयुक्त कलेक्टर एवं स्कूल शिक्षा विभाग की जिला नोडल अधिकारी श्रीमती शशि मिश्रा, जिला शिक्षा अधिकारी श्री आरके ठाकुर के अलावा समस्त बीईओ, बीआरसी मौजूद रहें।

विकसित कृषि संकल्प अभियान का क्रियान्वयन सतत जारी

विदिशा (निप्र)। विदिशा जिले मे किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग तथा कृषि संबद्ध विभाग द्वारा खरीफ पूर्व विकसित कृषि संकल्प अभियान का संचालन 29 मई से 12 जून 25 तक किया जा रहा है। अभियान के अंतर्गत आज सिरोंज तहसील के ग्राम गेहूंखेड़ी, ग्राम फूफेर और ग्राम पंचायत रतनबरी में शिविर का आयोजन कर अभियान के उद्देश्यों को रेखांकित कर खरीफ पूर्व तैयारी के लिए उन्नत एवं वैज्ञानिक तकनीकों, नवीन अनुसंधानों एवं राज्य सरकार की योजनाओं, प्राकृतिक खेती, जल प्रबंधन फसल विविधिकरण, पशुपालन, उद्यानिकी, मछली पालन एवं कृषि यंत्रीकरण की जानकारियों से अवगत कराया गया ताकि, कृषकों की आय में वृद्धि हो और वे सतत् कृषि पद्धतियों को अपना सकें। शिविर में किसानों को नरवाई ना जलाने के लिए प्रेरित करते हुए नरवाई जलाने से मिट्टी व पर्यावरण को होने वाले नुकसानों के बारे में बताया गया।

अनीस बज्मी की निर्देशित, सलमान खान, अनिल कपूर और फरदीन खान स्टार की 'नो एंट्री' अपनी बेहतरीन कॉमिक टाइमिंग के लिए जानी जाती है। अब इस फिल्म के सीक्वल का बेसब्री से इंतजार किया जा रहा हैं। 'नो एंट्री 2' में पहले अनिल कपूर, वरुण धवन और दिलजीत दोसांझ को कास्ट किया जाना था। बाद में दिलजीत दोसांझ के पीछे हटने की अटकलें लगाई जाने लगीं। इस बीच अब अनीस बज्मी ने दिलजीत दोसांझ के फिल्म 'नो एंट्री 2' छोड़ने पर अपनी प्रतिक्रिया जाहिर की।

दिलजीत दोसांझ ने 'नो एंट्री-2' छोड़ी

नो एंट्री' एक ऐसी फिल्म थी, जिसने दर्शकों को हंसी का ओवरडोज दिया। आज भी दर्शक इस कॉमेडी ड्रामा को ओटीटी पर इंजॉय करते हैं। इसकी पॉपुलैरिटी को देखते हुए निर्माताओं ने हाल ही में 'नो एंट्री 2' की अनाउंसमेंट की। कहा जा रहा था कि सीक्वल में वरुण धवन, अर्जुन कपूर और दिलजीत दोसांझ मुख्य भूमिका में होंगे। हालांकि, कुछ हफ्ते पहले खबर आई कि दिलजीत ने क्रिएटिव

मतभेदों के कारण फिल्म से किनारा कर लिया। अब, निर्देशक अनीस बज्मी ने इसपर चुप्पी तोड़ी है।

अनीस बज्मी ने कहा कि वह दिलजीत के बाहर निकलने से 'परेशान' नहीं हैं। वास्तव में, यह पहली बार नहीं है कि उन्हें ऐसे अभिनेता के साथ काम करना पड़ रहा है, जो मूल कास्टिंग का हिस्सा नहीं था। डायरेक्टर ने कहा कि मैं बस खुश हूं कि फिल्म बन रही है. इससे बड़ी कोई खुशी नहीं है। इस समय, वो ही हो रहा है जो ऊपर वाला चाहता है। मैं बहुत ईमानदारी से काम करता हूं और बाकी सब भगवान पर छोड़ देता हूं। ऐसा नहीं है कि मैंने केवल उन अभिनेताओं के साथ काम किया है, जो अब तक की मेरी फिल्मों में मेरी पहली पसंद रहे हैं। कई बार एडजस्टमेंट करना पड़ता है।

दिलजीत के साथ अपनी मुलाकात को याद करते हुए, अनीज ने कहा कि हमारी आखिरी मुलाकात, जो कि दूसरी बार थी, 10 मिनट तक चली। हम उनकी तारीखों पर चर्चा कर रहे थे। क्योंकि, कुछ आगे-पीछे हो रहा था। उन्होंने मुझे बताया कि वह अपनी तारीखें एडजस्ट करने की कोशिश कर रहे हैं। बोनी जी भी वहां थे, चूंकि यह एक बड़ी फिल्म है, इसलिए जो कुछ भी होता है वह खबर बन जाता है। मुझे ये चीजें करने की आदत है और मैं ऐसी चीजों को खुद को परेशान नहीं करने देता। मैं कभी सफाई नहीं देता, जो होना है, वो ही होगा और जो होगा, अच्छा ही होगा।

हालांकि 'नो एंट्री-2' से बाहर होने से दिलजीत संग अनीज बज्मी का रिश्ता खराब नहीं हुआ है। डायरेक्टर ने कहा कि दिलजीत एक बहुत ही ईमानदार इंसान हैं और वह एक बहुत ही प्रतिभाशाली अभिनेता हैं। अपने पूरे जीवन में, मैं उनसे सिर्फ 20 मिनट के लिए मिला हूं। पहली

बार मैं उनसे तब मिला था जब मैं उन्हें स्क्रिप्ट सुनाने गया था। उन्होंने पूरी स्क्रिप्ट भी नहीं सुनी और कहा कि कहानी समझ गया हूं, आप पिक्चर बना रहे हैं। तीन हीरो हैं, कॉमेडी है। वह तुरंत फिल्म करने के लिए तैयार हो गए।

'नो एंट्री' 2005 की हिंदी भाषा की कॉमेडी फिल्म है, जिसे अनीस बज्मी ने लिखा और निर्देशित किया है। बोनी कपूर ने इसका निर्माण किया है। इस फिल्म में अनिल कपूर, सलमान खान, फरदीन खान, बिपाशा बसु, ईशा देओल, लारा दत्ता, सेलिना जेटली और बोमन ईरानी मुख्य भूमिका में हैं। यह तमिल फिल्म 'चार्ली चैपलिन' (2002) की आधिकारिक रीमेक है। फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर शानदार कलेक्शन किया था।

विवादों के बीच कमल हासन की 'ठग लाइफ'

कमल हासन की फिल्म 'ठग लाइफ' 5 जून को देशभर के सिनेमाघरों में रिलीज हो गई। हालांकि, कन्नड़ और तमिल भाषा पर कमल हासन की टिप्पणी पर उठे विवाद के बाद फिल्म को कर्नाटक में रिलीज नहीं किया गया। इस पैन इंडिया गैंगस्टर ड्रामा को लेकर एक्सपर्ट्स का मानना था कि ये फिल्म ओपनिंग डे पर 35 करोड़ रुपए से ज्यादा कमा सकती है। लेकिन, ऐसा नहीं हुआ। कर्नाटक में फिल्म रिलीज न होने की वजह से फिल्म को नुकसान भी हुआ। इसके बावजूद फिल्म ने पहले दिन ठीक ठाक शुरुआत की।

लीजेंडरी डायरेक्टर मणिरत्नम की इस फिल्म ने पहले दिन 8:05 बजे तक 11.67 करोड़ रुपए का कलेक्शन कर लिया। ये आंकड़े फाइनल नहीं हैं। कमल हासन की फिल्म और अक्षय कुमार की 'हाउसफुल 5' के बीच टक्कर होनी है। लेकिन, कमल हासन ने अक्षय कुमार की कॉमेडी फिल्म से एक दिन पहले रिलीज करके पहले ही बढ़त ले ली। हाउसफुल 5 भी पहले दिन 22-25 करोड़ रुपए की

ओपनिंग ले सकती है। हालांकि, अक्षय कमल हासन को कितना नुकसान पहुंचाएंगे ये कल उनकी फिल्म रिलीज होने के बाद पता चलेगा लेकिन आज कमल हासन पहले ही बढ़त ले चुके हैं.

फिल्म को युवा, रावण और पीएस 1, पीएस 2 बनाने वाले मणिरत्नम ने डायरेक्ट किया है। फिल्म में कमल हासन के साथ तृषा कृष्णन, ऐश्वर्या लक्ष्मी, सान्या मल्होत्रा और जोजू जॉर्ज भी हैं. कोईमोई के मुताबिक, फिल्म को 200 करोड़ रुपए के बजट में तैयार किया गया। फिल्म को कन्नड़ में न रिलीज करने की वजह से 12-15 करोड़ रुपए का नुकसान संभावित है और हिट होने के लिए करीब 400 करोड़ रुपए के कलेक्शन की जरूरत पड़ेगी।

रियल बॉक्स

वो दशक जो हिंदी सिनेमा का बेहतरीन दौर रहा

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

सिनेमा की शुरुआत के बाद करीब चार दशक से ज्यादा समय देश की गुलामी का समय था! कई घोषित और अघोषित बंदिशें थीं। फिल्मकारों के लिए निर्माण के आधुनिक संसाधन जुटाना भी आसान नहीं था। फिल्म की ज्यादातर कहानियां भी धार्मिक कथाओं और राजा की कथाओं तक केंद्रित थीं। सामाजिक बेड़ियों के कारण लम्बे समय तक महिला कलाकारों का फिल्मों में काम करना संभव नहीं हुआ! धीरे-धीरे हालात सामान्य हुए। आजादी के बाद सिनेमा ने भी करवट ली! ये वो दौर था, जब देश आजाद था और सामाजिक सोच बदल रहा था! फिल्मकारों के सामने भी नई कहानियों के विकल्प थे।

इसलिए कहा जा सकता है कि 1951 से 1960 का दशक हिंदी सिनेमा का सबसे बेहतरीन युग था। इन दस सालों में बहुत कुछ ऐसा हुआ, जो बीते चार दशकों में नहीं हुआ और न बाद के सात दशकों में! इस समय को बेहतरीन इसलिए कहा जा सकता है, कि इस दौरान मुगले आजम, मदर इंडिया, प्यासा, कागज के फूल, दो बीघा जमीन, आवारा और 'दो आंखें बारह हाथ' जैसी कालजयी फ़िल्में बनी। ये वो फ़िल्में थीं, जो निर्माण, कथानक और अभिनय सभी में बेजोड़ थीं। आज भी इन फिल्मों को श्रेष्ठता के मामले में मील का पत्थर माना जाता है। संगीतकार नौशाद, शंकर जयकिशन और एसडी बर्मन और गायक, गायिकाएं लता मंगेशकर, मोहम्मद रफी, आशा भोसले, किशोर कुमार और मुकेश की मखमली आवाज भी इसी स्वर्णिम काल की देन है।

दरअसल, देश में सिनेमा को सौ साल से ज्यादा हो गए। इस दौरान बहुत कुछ बदला। समय, काल, परिस्थितियों के साथ देश ने बरसों की गुलामी के बाद आजादी भी देखी। इस दौरान फ़िल्में श्वेत-श्याम से रंगीन हो गई! सिनेमा के निर्माण की प्रक्रिया, कलाकारों का अभिनय, नए जमाने के कथानकों के साथ फिल्म संगीत में भी क्रांति आ गई! लेकिन, फिर भी दर्शकों को में अभी भी संतुष्टि का वो भाव नहीं आया, जो इतने सालों में आना था। निर्माण की बेहतरी के साथ फिल्मों से कमाई बढ़ी, पर दर्शक संतुष्ट नहीं है! उसे लगता है कि कहीं कोई कमी तो है! यही कारण है कि कई फ़िल्में जोरदार प्रचार और नामी कलाकारों के बाद भी दर्शकों के दिल को नहीं छू पाती!

जबकि, कुछ ऐसी फिल्मों को दर्शक पसंद करते हैं, जिनके बारे में पहले से अनुमान नहीं लगाया जाता! ऐसे में सवाल उठता है कि सौ साल से ज्यादा लम्बे इतिहास में क्या कोई ऐसा दौर आया, जिसे सिनेमा का स्वर्णिम काल कहा जाए! इस सवाल के निश्चित रूप से अलग-अलग जवाब हो सकते हैं! क्योंकि, दर्शकों की रूचि भी एक सी नहीं होती! फिर इस सवाल का सही जवाब यही है, कि जिस समयकाल में कालजयी फ़िल्में ज्यादा बनी, वही स्वर्णिम दौर कहा जाएगा! इसे हिंदी फिल्मों का आदर्शवादी दौर भी कहा जाता है। इस दौर का नायक प्यार करने में तो पीछे नहीं था! पर, परिवार के दबाव, सामाजिक प्रतिष्ठा और प्रतिबद्धता के आगे वो प्यार की कुर्बानी देने में भी पीछे नहीं हटा!

आवारा, मदर इंडिया, जागते रहो, श्री 420, झाँसी की रानी, परिणीता, बिराज बहू, यहूदी, बैजू बावरा और 'जागृति' जैसी फिल्में इसी समय में बनी। ये गुरुदत्त, बिमल राय, राज कपूर, महबूब खान, दिलीप कुमार, चेतन आनंद, देव आनंद और ख्वाजा अहमद अब्बास का समय था। राज कपूर जैसे अनोखे फ़िल्मकार ने भी इसी दशक में फिल्म निर्माण और निर्देशन की शुरुआत की। यह कहना गलत नहीं होगा कि सिनेमा के नायक को असली

ताकत भी इसी दशक में मिली। आजादी के बाद देश का सोच भी आकार ले रहा था, इसलिए ये समाज के आदर्शवाद का भी समय था।

फिल्मकारों ने समस्या प्रधान फिल्मों की तरफ भी रुख किया और सामाजिक भेदभाव, जातिवाद, भ्रष्टाचार, गरीबी, फासीवाद और सांप्रदायिकता के खिलाफ फिल्में बनाई। सिनेमा के परदे पर वे सारे सपने नजर आने लगे, जो आजाद देश के आदर्श समाज के लिए देखे गए थे। बिमल रॉय की फिल्म 'दो बीघा जमीन' ऐसे ही सपनों की फ़िल्म थी। ये फिल्म राष्ट्र विकास के मॉडल और उसके बीच समाज के दो वर्गों के बीच सांठगांठ को सामने लाने वाली थी। इस फिल्म का नायक कर्ज की रकम चुकाने के लिए रोजगार की तलाश में गांव से कलकत्ता जाता है। कहा जाता है कि आधुनिकता ही समृद्धि लाती है।

प्रेम में पगी कालजयी फिल्मों की बात की जाए तो बिमल रॉय ने 'देवदास' और गुरुदत्त ने 'प्यासा' बनाकर इसकी शुरुआत की! लेकिन, फिर भी इस दशक में प्रेम प्रधान फिल्मों का अभाव देखा गया। क्योंकि, इस समय में सामाजिक बंधन, मर्यादा और नैतिकता का जोर ज्यादा था। 1951 में बनी राज कपूर की 'आवारा' हिट साबित हुई। 'आन' और 'चोरी-चोरी' भी ऐसी फ़िल्में थीं, जो आज भी याद की जाती है। 1954 में वी शांताराम की 'झनक झनक पायल बाजे' भी पसंद की गई। हिंदी की कई श्रेष्ठ फिल्में इसी दौर की देन रही। फिल्मों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कारों की शुरुआत भी इसी दशक में 1954 से हुई।

अभिनेता देवानंद की 'सीआईडी' और 'फंटूश' इसी समय की सफल फ़िल्में थीं। 1957 में आई महबूब खान की 'मदर इंडिया' ने तो इतिहास बना दिया। ये इस दशक की सबसे ज्यादा कमाई वाली फिल्म तो थी, ऑस्कर के लिए विदेशी भाषा श्रेणी में भारत की तरफ नामित होने वाली भी पहली फिल्म बनी। हिंदी सिनेमा का ये महत्वपूर्ण पड़ाव था। दिलीप कुमार और वैजयंतीमाला की 'नया दौर' भी इसी दशक में आई! 1957 में रिलीज हुई गुरुदत्त की 'प्यासा' भी कालजयी फिल्मों में एक थी। इस फ़िल्म को तो 'टाइम' पत्रिका ने दुनिया की 100 श्रेष्ठ फिल्मों में शामिल किया है। दो आंखें बारह हाथ, पेइंग गेस्ट, मधुमती, चलती का नाम गाड़ी, फागुन, हावड़ा ब्रिज, दिल्ली का ठग, अनाड़ी, पैगाम, नवरंग और 'धूल का फूल' जैसी फिल्में भी इस दशक की फेहरिस्त में हैं।

बलराज साहनी, अशोक कुमार और शम्मी कपूर की फिल्मों को जबरदस्त सफलता मिली। वहीं सत्यजीत रॉय, विमल राय, गुरुदत्त, महबूब खान, वी शांताराम, के आसिफ, ऋत्विक घटक और मृणाल सेन जैसे महान फिल्मकारों ने भारतीय सिनेमा को अंतरराष्ट्रीय मंच पर पहचान दिलाई। साथ ही यश चोपड़ा, मनमोहन देसाई, विजय आनंद, ऋषिकेश मुखर्जी, शक्ति सामंत जैसे फिल्मकारो ने इसी दशक में सिनेमा की दुनिया में कदम रखा। फिल्मों में बरसों तक अपनी अदाओं से दर्शकों को हंसने के लिए मजबूर करने वाले जॉनी वॉकर, महमूद, आईएस जौहर, किशोर कुमार, भगवान दादा, मुकरी, गोप जैसे कलाकारों ने भी इसी काल में मनोरंजन की दुनिया में कदम रखा। अपनी खलनायकी से दर्शकों के रोंगटे खड़े कर देने वाले प्राण, केएन सिंह, जीवन, कन्हैया लाल और मदनपुरी भी परदे पर दिखाई दिए।

इसी समय 'काली घटा' से बीना राय ने अपने फिल्म करियर की शुरुआत की और बाद में प्रेमनाथ की पत्नी बनी। लता मंगेशकर और आशा भोंसले ने फिल्म 'दामन' के लिए पहली बार युगल गीत 'ये रुकी रुकी हवाएं, ये बुझे-बुझे सितारे' गीत गाया। 1951 मे प्रदर्शित आवारा के गीत 'घर आया मेरा परदेसी' में राजकपूर और नरगिस पर पहला स्वप्न दृश्य फिल्माया गया था। राज कपूर ने प्रेम के जिस फ़िल्मी चलन की शुरूआत की, वह अपने पूरे शबाब पर आया। 1960 में आई ऐतिहासिक फिल्म 'मुगले आजम' आज भी बेहतरीन फिल्मों में गिनी जाती है। 'मुगले आजम' 5 अगस्त 1960 को देश के डेढ़ सौ सिनेमाघरों में एक साथ लगने वाली पहली हिंदी फ़िल्म थी। बरसात की रात, कोहिनूर, चौदहवीं का चांद, जिस देश में गंगा बहती है, दिल अपना और प्रीत पराई जैसी फिल्मों ने भी बॉक्स ऑफिस पर अच्छा कारोबार किया। 1961 में आई 'जंगली' से शम्मी कपूर स्टार बने और सायरा बानो ने पहली बार परदे पर कदम रखा। इसके बाद के दौर में फिल्मों का दृष्टिकोण यथार्थपरक हो गया। बाद के दशक में फिल्मों के साथ दर्शकों का सोच भी यथार्थ की तरफ दौड़ने के साथ रंगीन हो गया!

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

'राजनीति-2' की स्क्रिप्ट और राइटिंग पर काम

2010 में आई प्रकाश झा की पॉलिटिकल ड्रामा 'राजनीति' को रिलीज हुए 15 साल हो गए। आज भी इस फिल्म का फैंस के बीच जबरदस्त क्रेज देखने को मिलता है। अब फिल्म के 15 साल पूरे होने पर निर्देशक प्रकाश झा ने राजनीति के सीक्वल को लेकर एक बड़ी जानकारी साझा की। साथ ही उन्होंने ये साफ कर दिया है कि फिल्म का सीक्वल बनेगा भी या नहीं।

प्रकाश झा ने 'राजनीति' के सीक्वल को लेकर बात की और इसके बारे में जानकारी साझा की। प्रकाश झा ने बताया कि राजनीति की यात्रा तो अनवरत है, चलती ही रहती है। 'राजनीति 2' के लिए हमेशा से ही योजना थी। हालांकि, कास्टिंग और

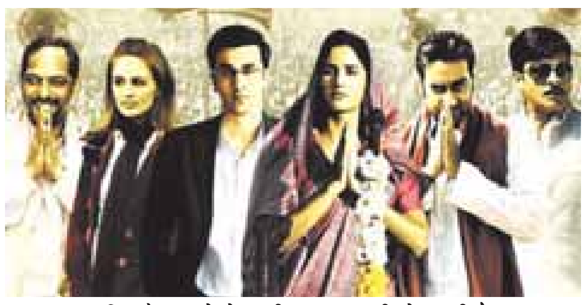

शूटिंग के मामले में अभी तक कुछ भी ठोस नहीं है, लेकिन मैं फिलहाल इस पर काम कर रहा हूं। इसकी स्क्रिप्ट और राइटिंग पर काम चल रहा है।

इस दौरान 'राजनीति' बनाने के वक्त को याद करते हुए प्रकाश झा ने कहा कि फिल्म का प्री-प्रोडक्शन एक साल तक चला। हमने एक भीड़ वाले सीन के लिए 8,000 कलाकारों को चुना, जो काफी मुश्किल काम था। कास्टिंग के बारे में अच्छी बात यह थी कि हमने जिससे भी संपर्क किया, उसे स्क्रिप्ट पसंद आई और वह इसमें शामिल हो गया। उन्हें अच्छा प्रदर्शन करने की चुनौती महसूस हुई।

लोग कहते हैं कि यह एक व्यावसायिक सफलता थी। 2010 में रिलीज हुई राजनीतिक थ्रिलर में प्रतिद्वंद्वी राजनीतिक परिवारों और पार्टियों के बीच एक कट्टर संघर्ष को दर्शाया गया है। फिल्म में रणबीर कपूर, अजय देवगन, कैटरीना कैफ अर्जुन रामपाल, मनोज बाजपेयी, नाना पाटेकर और नसीरुद्दीन शाह जैसे कलाकार नजर आए हैं।

सिनेमा में मानसिक कमजोर किरदारों की कमी नहीं

अशोक जोशी

दुनियाभर में 'ऑपरेशन सिंदूर' की हकीकत और पाकिस्तान की करतूतों का पर्दाफाश करने गए प्रतिनिधिमंडल के चर्चित सदस्य ओबेदुल्ला ओवैसी ने अपने बयान में बार-बार पाकिस्तान और उनके हुक्मरानों को मानसिक रूप से कमजोर होने की संज्ञा दी।

जिस तरह से 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान पाकिस्तान ने अपनी तबाही और जबरदस्त हार के बावजूद जश्न मनाया और सेनाध्यक्ष को जिस तरह से फील्ड मार्शल के तोहफे से नवाजा गया, उसे देखते हुए पाकिस्तान के हुक्मरानों को या कहा जाना गलत नहीं है। वैसे समाज और सिनेमा में भी ऐसे लोगों की कमी नहीं होती।

देखा जाए तो पागलपन एक मानसिक रोग है, जिसमें इंसान अपने मस्तिष्क से नियंत्रण खो देता है और असामान्य व्यवहार करने लगता है। इस रोग ने फिल्मकारों को फिल्में बनाने और चलाने के लिए एक नया विषय दिया है। लेकिन, यह बात अलग है कि फिल्मी पागल आम पागलों से अलग होते हैं। हिंदी फिल्मों में पागलपन का दौर कब आरंभ हुआ कहना मुश्किल जरूर है, लेकिन यह पता लगाना मुश्किल नहीं है कि पागलपन के फार्मूले ने कितने फिल्मकारों को पागल बनाया है। शुरुआती दिनों में हिन्दी फिल्मों में पागल या पागल खाने का एकाध सीन जोड़कर फिल्मों के कथानक को आगे बढ़ाया जाता था।

इन फिल्मों में दिखाए जाने वाले पागल किरदार पागल कम और कार्टून ज्यादा दिखाई देते थे। जब फिल्म का कोई किरदार पागल बनकर पागल खाने में दाखिल होता था, तो उसके इर्दगिर्द पागलों की पूरी फौज जमा होकर अजीबोगरीब कारनामे दिखाया करती थी। मजे की बात तो यह होती है कि यदि कोई नायिका पागलखाने जाती तो उसे घेरने महिला पागलों की फौज खड़ी हो जाती है और नायक पागल बनकर पागल खाने जाता है, तो कामेडियन की फौज 'मेरी भेंस को डंडा क्यों मारा; जैसे संगीतमय सवाल करने लगतीं है।

फिल्मों में नायक या नायिका के पागल होने के कई कारण होते हैं। वैसे तो हीरो-

हीरोइन के पागल होने का कारण प्यार ही होता है। जिसका सबूत देने के लिए वह चीख चीखकर गाते हैं 'मै तेरे प्यार में पागल ...।' लेकिन, नायक या नायिका को पागल बनाकर उनकी जायदाद हड़पने के लिए चाचा या मामा नहीं तो सौतेला भाई या सौतेली माँ दवाई देकर या डॉक्टर की मदद लेकर यह महान काम करते हैं। फिल्मों के लगभग सभी बड़े-छोटे कलाकार परदे पर पागल बन चुके हैं। इस तरह की फिल्मों में शम्मी कपूर प्रेम में हताश होकर 'पगला कहीं का' कहलाता है और डॉक्टर आशा पारेख का प्यार उसके पागलपन का इलाज करता है। 'इत्तेफाक' में राजेश खन्ना पागल बनकर नंदा के घर में घुसकर एक हत्याकांड का पर्दाफाश करता है।

हिंदी सिनेमा में संजीव कुमार ने पागलों एक रूतबा प्रदान किया था। 'खिलौना' में

उन्होंने पागल की शानदार भूमिका निभाई, जिसे आज भी मील का पत्थर माना जाता है। इस फिल्म अपार सफलता ने संजीव कुमार को फिल्म इंडस्ट्री का सर्टिफाइड

पागल बना दिया था। उसके बाद वे 'अनहोनी' में फिर पागल बने। इसके पास हर दूसरा निर्माता उन्हें पागल की भूमिका लेने की इच्छा करने लगा था, पर उन्होंने फिर ऐसी भूमिकाएं नहीं की। जहाँ संजीव कुमार और राजेश खन्ना पागलों की भूमिका में सजीव लगे वहीं जीतेन्द्र, राजेन्द्र कुमार कुर्ता फाड़ पागल बनकर हास्यास्पद दिखाई दिए। किशोर कुमार और महमूद पागल बनकर उछल कूद करते रहे तो राजेन्द्र नाथ को हर भूमिका में पागल की तरह मुद्राएं बनाते देखा गया। इसके बाद शक्ति कपूर, कादर खान और परेश रावल ने फिल्मी पागलों की परम्परा को आगे बढ़ाने का काम किया।

यदि पागलपन या मानसिक विक्षिप्तता पर बनी फिल्मों को देख जाए तो 'इत्तेफाक' के बाद या उससे कहीं ऊपर राजेश खन्ना और वहीदा रहमान की फिल्म 'खामोशी' का नंबर आता है, जिसमें पागल रोगी का इलाज करने वाली नर्स और फिर उसके प्रेम में पागल होती वहीदा रहमान ने कमाल का अभिनय किया था। इसी श्रंखला की फिल्मों में श्रीदेवी और कमल हासन की 'सदमा' भी यादगार फिल्मों में से एक मानी जाती है। इस विषय पर बनी फिल्मों में देव आनंद की 'फंटूश' और सुनील दत्त की 'यादें' भी उल्लेखनीय हैं। 'दिल दिया दर्द लिया' की अंतिम रीलों में प्राण ने जबरदस्त एक्टिंग की थी। देखा जाए तो 'रंगा खुश' का जोगिन्दर, 'शोले' का गब्बर, 'शान[का शाकाल, 'मिस्टर इंडिया' का मोगेम्बो भी किसी पागल से कम नहीं थे।

नए दौर की फिल्मों में शाहरुख़ खान ने डर में जुनूनी प्रेमी, संजय दत्त ने 'खलनायक' और सलमान खान ने 'तेरे नाम' में राधे मोहन की भूमिका में पागलपन के रंग जरूर भरे, लेकिन वह अपने किरदार पर सितारों की तरह हावी रहे। यही बात कंगना रनौत की फिल्म 'जजमेंटल है क्या' पर भी लागू होती है। क्योंकि, परदे से परे उनकी हरकतों ने उनकी जो इमेज बनाई, वह परदे के पागलों पर ज्यादा हावी रही है। 'एनिमल' में भी पागलपन के इसी अंदाज को दूसरे रंग में ढाल कर फ्लॉप नायक बॉबी देओल सफल खलनायक बनकर उभरे हैं। हो सकता है आगामी किसी फिल्म में पाकिस्तान के राजनीतिकों के पागलपन को किसी हिंदी फिल्म में शामिल कर भुनवाया जाए।

जली... तो जली... बिजली !

प्रकाश पुरोहित

इस बार जो बिजली का बिल आया, उसके साथ कुछ सावधानियों का पर्चा भी नत्थी था। अगर सभी को नहीं मिला हो तो जन-साधारण की सुविधा के लिए यहां देना अपना कर्तव्य तो नहीं, धर्म समझता हूं, क्योंकि आजकल धर्म ही इस देश में कर्तव्य से पहले जरूरी है। पर्चे में लिखा है...

आम लोगों को यह शिकायत रहती है कि जब देखो लाइट यानी बिजली यानी बत्ती यानी इलेक्ट्रिसिटी गुल हो जाती है। दिन और रात में हर घंटे के हिसाब से चौबीस बार तो ऐसा होता ही है कि कभी क्षणिक तो कभी इस पहर से उस पहर तक नदारद रहती है। कहते हैं बिजली के आने-जाने पर इतना सट्टा लगता है कि आइपीएल को भी घाटा होने लगता है।

ऐसी भी जनश्रुतियां हैं कि लाइट जाते ही बच्चे कहने लगते हैं कि या तो बारिश शुरू हो रही है या होने वाली है या हो के गुजर गई है। हमारे बिजली के तार पानी से पिघलते हैं, यह सच है, जबकि हम पूरी कोशिश करते हैं कि बारिश की एक बूंद भी इलेक्ट्रिक वायर पर ना गिरे। इसीलिए घने पेड़ों के आसपास बिजली के खंभे लगाए जाते हैं कि बरसात से बचाव हो सके। जबकि नासमझ आम आदमी कहता है कि पेड़ों की छंटाई-कटाई नहीं होती है।

हम तो पूरी कोशिश कर ही रहे हैं, थोड़ी जहमत आप लोग भी उठा लें तो बारिश के मौसम में, अभी जो कायम है, उससे ज्यादा परेशानी नहीं होगी। इसके लिए सबसे पहले तो यही कि मच्छरदानी, कछुआ अगरबत्ती लगाएं और यदि ड्राइंग रूम में बैठे टीवी पर समाचार देख रहे हैं तो उस समय इस बात का ध्यान रखें कि उड़ते मच्छर को हाथों से मारने की कोशिश नहीं करें, क्योंकि मच्छर को दो हथेलियों के बीच दबाने से जो आर्तनाद निकलता है, उससे बत्ती गुल हो सकती है! आसान तरीका यही है कि बिजली का रैकेट लेकर बैठें। यदि उड़ता मच्छर नजर आ जाए तो कभी भी उसे समूल नष्ट करने की कोशिश नहीं करें, यानी उसे चिमटी से पकड़ने की कोशिश करें और यदि इस कोशिश में सफल हो जाएं तो उसका बाहर ले जाकर अंतिम संस्कार करें।

आजकल बिजली बड़ी सेंसेटिव हो गई है। आप लोग किसी बात पर खुश होते हैं तो सामने वाले के हाथ पर अपना हाथ मारते हैं। यह खतरनाक है। इससे भी जो आवाज पैदा होती है, उससे बिजली जा सकती है। ध्यान रखें 'हायफाय' भी धीमे करें कि बिजली तक आवाज नहीं पहुंचे। अभी तो नहीं, लेकिन सर्दी में छींकें बहुत आती हैं। उस समय भी आपको यह सावधानी रखनी चाहिए कि जहां तक हो सके, बाहर सड़क पर जा कर छींकें। इससे यह हो सकता है कि स्ट्रीट लाइट भले ही उड़ जाए, लेकिन आपका घर तो रोशन रहेगा।

कुछ संगीत-प्रेमी घर में ही तबला बजाते रहते हैं, यह जाने बगैर कि आवाज से बिजली जा सकती है। जहां तक हो सके हारमोनियम यानी पेटी-बाजा ही बजाएं और सा से आगे ना बढ़ें। प ध नि सा तक हो सकता है बिजली बर्दाश्त ना करे और घर से निकल लें। अब यह आपको तय करना है कि संगीत जरूरी है या बिजली। यकीनन बिजली ही जरूरी होगी, क्योंकि तबले को डाइनिंग टेबल पर रख कर डिनर नहीं किया जा सकता, बल्कि अंधेरे में उसे संभालना ही मुश्किल होता है... तो ज्यादा जरूरी हो तो ऐसी जगह निकल जाएं, जहां बिजली के तार ना हों। वैसे भी साधना ऐसी ही सुनसान जगह पर अच्छे से होती है।

ये तो कुछ मोटी-मोटी बातें रहीं, लेकिन और भी नन्हीं मुन्नी सावधानियां हैं, जैसे बिजली जाने पर कम्प्लेंट नहीं करें, क्योंकि आप ही सोचिए, शिकायत सुनें या उसे दूर करें। लोगों को बिजली ना होने से ज्यादा शिकायत इस बात की रहती है कि कोई फोन नहीं उठाता है। हमने शिकायत दूर करने के लिए सभी कर्मचारियों को फोन के आसपास बैठा दिया है। हो सकता है झपट्टा मारने के चक्कर में कर्मचारी आपस में भिड़ जाते हों कि 'पहले मैं उठाऊंगा।' सबसे पहले और ज्यादा फोन अटेंड करने वाले को इंसेंटिव भी दे रहा है डिपार्टमेंट। आप लोग जितनी कम शिकायत करेंगे, हम उतनी ही मुस्तैदी और लगन से बिजली को वापस लाने की कोशिश करेंगे। घर में हर समय मोमबत्ती रखें। इससे बिजली खर्च कम होगा और बाहर होटल में कैंडल लाइट डिनर के नाम पर जो हजारों रुपए फूंक देते हैं, बच जाएंगे।

देखिए, ताली दोनों हाथ से बजती है, हम तो लगे पड़े हैं, क्योंकि कभी यहां तो कभी वहां और कभी-कभी यहां-वहां बिजली जाती ही रहती है। हर रोज और हर समय हम कहीं ना कहीं बिजली को वापस लाने में लगे रहते हैं। आप घर बैठे इतना सहयोग तो कर ही सकते हैं, क्योंकि बिजली की जरूरत आपको ही रहती है। ठीक है, आप बिजली का बिल देते हैं, लेकिन सरकार को भी टैक्स तो देते हैं ना, फिर भी सरकार ही तो सभी काम नहीं करती है ना। कुछ तो आम नागरिक की भी जिम्मेदारी है या नहीं।

देखिए, अभी 'ऑपरेशन सिंदूर' के बारे में सभी को एक ही स्वर में बोलना है तो शशि थरूर या रविशंकर प्रसाद बोल रहे हैं या नहीं। तो आपके घर रोशन रह सकें, इसके लिए भी कुछ तो राष्ट्रीय भावना से काम लें, जयहिंद!

और क्या कह रही हैं जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

रेड लिपस्टिक-स्त्री शक्ति का प्रतीक

मेरे जज़्बे अपाहिज कर दिये गये है
मैं मुकम्मिल गुफ़्तगू नहीं कर सकती
मैं मुकम्मिल उधार हूँ
मेरी कब्र के चरागों से हाथ तापने वालों
ठिठुरे वक़्त पर एक दिन मैं भी कांपी थी।

मैं दु:खी हूँ। संतप्त हूँ। कलम चला कर शब्दों का सहारा लेकर उन स्त्रियों का साथ देना चाहती हूँ जो पूर्णत: बैन हैं। मैं देशों की नहीं, देश में रहने वाली स्त्रियों की बात कर रही हूँ जो प्रताड़ित हो रही हैं, जिन पर ज़ुल्म हो रहा है।

जैसे हिटलर एक तानाशाही का प्रतीक बना था वहीं अब तालिबान ने अफ़गास्तिान के प्रति वही रवैया अपना लिया है। हम यहाँ तालिबान और अफ़गास्तिान की आपसी रंज़िशों की नहीं बल्कि तालिबानियों द्वारा अफ़गानी स्त्रियों पर होने वाले अत्याचार की बात कर रहे है और वो अत्याचार है क्या?

1. घर से बाहर निकलने पर पाबंदी
2. हिजाब/नकाब हमेशा पहने रहना
3. मेकअप नहीं करना
4. सैलून नहीं जाना
5. शिक्षा प्राप्त करने की अनुमति नहीं
6. जिम और स्पोॅट्स में कोई भागीदारी नहीं
7. बाहर जाकर काम नहीं कर सकती
8. कभी भी बिना कारण बतायें जेल में डाली जा सकती है।

अफ़गास्तिान की फर्स्ट वूमेन मेयर

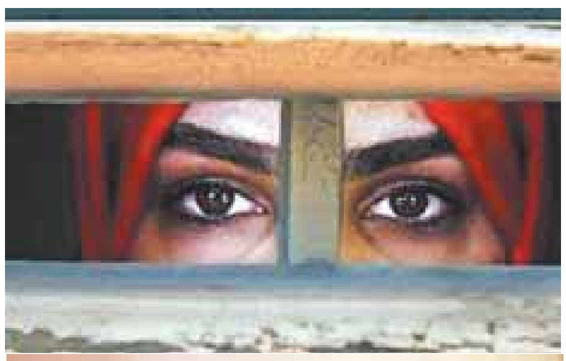

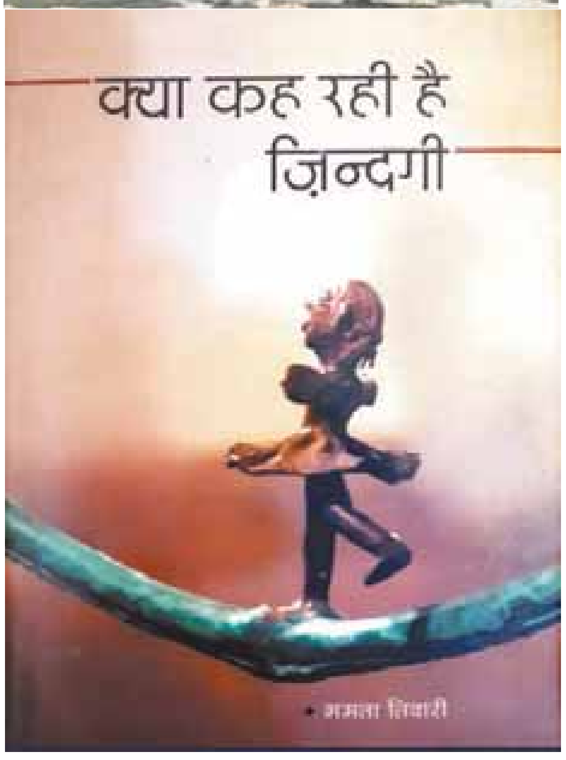

ज़ारीफ़ा घाफरी अपील कर रही है दुनिया उनका स्त्री अत्याचार के विरोध में साथ दे। अभी हाल ही में वे जर्मनी और इटली होकर आई हैं। ''मेरीलस्ट्रीप'' कहती है एक गिलहरी भी सड़क पार कर सकती, धूप और सूरज देख सकती है पर अफ़गानी महिला नहीं। ज़ारीफ़ा और भी देशों के हाई रैंक आफिसर, राजनीतिज्ञों से मिलना चाहती है। अभी के हालातों में बात करना भी मना है उनका। अफगानी महिलाओं ने बड़ी हिम्मत से सोशल मीडिया पर 'अफ़गास्तिान कल्चर' डू नॉट टच माय क्लॉथ का आहवान किया है। स्त्री को जबर्दस्ती तलाक दिलाकर जेल में रखा जा रहा है ताकि नौजवानों की तालिबानी फौज के नौजवानों से उनका जबर्रदस्ती निकाह करवा सके।

अब सोशल मीडिया पर अफगानी महिलायें रेड लिपस्टिक अभियान पर उतरी हैं। क्या है ये रेड लिपस्टिक अभियान। ये अभियान एक वैश्विक अवधारणा रही है जो अक्सर नारीवाद, सशक्तिकरण, विरोध और आत्म अभिव्यक्ति से जुड़ी होती है। इतिहास में लाल लिपिस्टक को कई बार महिलाओं के अधिकारों और सामाजिक न्याय के रूप में इस्तेमाल किया गया है। वर्ल्ड वार-2 में एलिजाबेथ ओर्डन जो बाद में बैन कर दी गई थी।

सेना में भर्ती स्त्रियों के शोषण के खिलाफ रेड लिपस्टिक काम पर लगाकर आने की सलाह दी थी। यू.के. में जब महिलाओं ने रेड लिपस्टिक लगा कर विरोध दर्शाया था। चूंकि आज अफ़गानी महिलायें रोड पर नहीं आ सकती तो वो यू ट्यूब पर अपने पारंपरिक कपड़े पहन, रेड लिपस्टिक लगा विरोध प्रकट कर रही है। मैं भी सभी विश्व की महिलाओं से अपील करती हूँ, मर्दो को रिझाने के लिये, सुंदर दिखने के लिये आपने कई बार रेड लिपस्टिक लगाई आज पीड़ित महिलाओं के समर्थन रेड लिपस्टिक लगाकर या हाथ में लेकर विरोध जतायें। आज तो यही कह रही है जिंदगी।

लुढ़कती आ रही सूरज की लाल गेंद....

फोटो- बंसीलाल परमार

जस्सी खालड़ा का 'अपहरण' जारी है!

श्याम बेनेगल ने कहा था कि सेंसर बोर्ड तो फिल्मों को सर्टिफिकेट देने के मकसद से बनाया था, जिसका सिर्फ काम जिस तरह की फिल्म है, उस तरह का सर्टिफिकेट देना था।

अनगिनत फिल्मकार हैं, जो सेंसर बोर्ड की दखलंदाजी के शिकार हैं। इसका ताजा शिकार हैं हनी त्रेहान की फिल्म 'पंजाब-95।' यह फिल्म नब्बे के दशक में पंजाब के हालात और जसवंतसिंह खालड़ा की कहानी पर है। दिलजीत दोसांझ ने जसवंत उर्फ जस्सी का किरदार निभाया है।

फिल्म टोरंटो फिल्म फेस्टिवल (2023) में शामिल थी कि खबर आई फिल्म तो वापस ले ली गई। यही लगा कि तैयार नहीं होगी। अब पता चला कि सेंसर बोर्ड ने कई कट लगा दिए हैं। कॉन फिल्म फेस्टिवल के दौरान पता चला कि हनी त्रेहान फिल्म की प्राइवेट स्क्रीनिंग रख रहे हैं तो चिंता थी कि कहीं कोई सिरफिरा खिलाफ न हो जाए। खैर, फिल्म तय समय पर शुरू हुई और दो मिनट में ही साफ हो गया कि संभल कर बैठना होगा, क्योंकि यह दास्तान जितनी परदे पर दिखाई दे रही है, उससे कई गुना ज्यादा इन किरदारों की जिंदगी की है।

❑ यूके से
प्रज्ञा मिश्रा

जसवंतसिंह खालड़ा अमृतसर में बैंक मैनेजर थे। जब करीबी की गुमशुदगी रिपोर्ट लिखाने जाते हैं तो पुलिस का रवैया और उनके तौर-तरीके देखकर खुद ही पूछताछ करने निकल पड़ते हैं, बस यहीं से सिलसिला शुरू होता है, जो बताता है कि उस दौर में हजारों बेगुनाह पुलिस के हाथों मारे गए और उन्हें पुलिस ने लावारिस बेनाम दर्ज कर उनका अंतिम संस्कार भी कर दिया। कई लाशें जला दीं और कई नदियों में बहा दीं। जब सरकार से जसवंत खालड़ा सवाल पूछने लगे और लोग उनके साथ जुड़ने लगे तो सितंबर-1995 में उनके घर के सामने से ही अपहरण लिया और फिर किसी ने उन्हें नहीं देखा। उनकी मौत की खबर गवाहों ने दी कि किस तरह पुलिस की ज्यादती से मौत हुई। यह सारी खबर उस दौर के अखबार के पर्चों में हैं। पुलिस ज्यादती की कोई इंतेहा नहीं थी, यह सभी जानते हैं। तब से लेकर अभी तक जसवंत खालड़ा का परिवार उनके जलाए दीये को रौशन रखे हैं।

हनी त्रेहान बताते हैं कि जसवंत खालड़ा परिवार और अकाली तख्त को फिल्म दिखा चुके हैं और किसी को दिक्कत नहीं है, लेकिन सेंसर ने पहले इक्कीस कट बताए, फिर अस्सी से ज्यादा कट बताने लगे और अब तो हालत यह है कि लगभग सवा सौ कट के बाद ही फिल्म को सर्टिफिकेट मिलने की बात है। इतना ही नहीं, सेंसर का कहना है कि फिल्म और खालड़ा का नाम बदलना होगा। जहां-जहां पंजाब पुलिस की बात है, उसे हटाना होगा और जितनी भी जगह गुरबाणी है हटाना होगा।

हनी का कहना है इतना सब करने के बाद फिल्म बचेगी ही नहीं। इसमें से ऐसी कौन-सी बात है, जो उस दौर में नहीं हुई। लगभग दो साल होने आए हैं। फिल्म सेंसर बोर्ड के ऑफिस के ही चक्कर लगा रही है। बीस साल से भी ज्यादा फिल्म इंडस्ट्री में काम करने के बाद फिल्म 'रात अकेली है' का यह डायरेक्टर इस वक्त अकेला है, क्योंकि उनका मानना है कि अगर तीस बरस बाद भी हम खालड़ा की कहानी और उनके के साथ खड़े नहीं हो सकते तो नैतिक तौर पर गलत हो रहा है। दिलजीत सिंह दो सांझ ने साफ कह दिया कि अगर फिल्म बिना काट-छांट के रिलीज होती है तो ही इसका प्रमोशन करेंगे, वरना नहीं। हनी के शब्दों में यूं लगता है जैसे जस्सी खालरा फिर किडनैप हो गए हैं।